‘‘ब्रह्म एक ही है’’ ग्रंथमाला

भक्त नंदनार

हिन्दी रुपान्तर

डॉ. एम. लक्ष्मणाचार्य

तेलुगु मूल

आचार्य के. सर्वोत्तम राव

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2016

BHAKTA NANDANAR

Hindi Translation
Dr. M. Lakshmanacharya

Telugu Original
Acharya K. Sarvottama Rao

T.T.D. Religious Publications Series No. 1216

First Edition : 2016

Copies :

Price :

Published by
Dr. D. Sambasiva Rao, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati - 517 507

D.T.P:
Publications Division,
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati - 517 507

प्राक्कथन

भारत के विविध प्रान्तों में, विभिन्न समयों में सभी कुल व जातियों में अनेक महान विभूतियाँ अवतरित हुईं। ऐसी महात्माओं ने अपनी समकालीन विविध परिस्थितियों से जूझते हुए सामाजिक प्रगति के लिए अथक परिश्रम किया था । इसके लिए उन्होंने जनता में सामाजिक चेतना के साथ - साथ आध्यात्मिक चेतना भी विकसित करने के लिए अपना तन-मन-धन लगाया था ।

ऐसी महात्माओं की जीवनियों को, उनके द्वारा व्यक्त की गई जीवन की यथार्थताओं व आध्यात्मिक संदेशों को भक्तों तक, विशेषकर, भावी नागरिकों (बच्चों) तक पहुँचाने के लिए तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् ने 'ब्रह्म एक ही है' नामक शीर्षक के अन्तर्गत एक पुस्तक श्रृंखला को प्रारंभ किया है । तदनुरुप कुछ विद्वानों से ऐसी महान विभूतियों के जीवन चरितों का चित्रण करनेवाले ग्रंथ लिखवाकर प्रकाशित करने का संकल्प किया है ।

इस क्रम में डॉ. एम.लक्ष्मणाचार्य द्वारा लिखा हुआ ''भक्तनंदनार'' नामक पुस्तक आप तक हम पहुँचा रहे हैं । यह हमारी आकांक्षा है कि इस ग्रंथ के अध्ययन द्वारा बड़े और छोटे दोनों आध्यात्मिक चेतना से लाभान्वित हो जाएँगे ।

सदा भगवान बालाजी की सेवा में

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

विषय क्रम

अनुबंध

भक्त नंदनार

सनातन धर्म

विश्व में अनेक धर्म हैं। इसमें कोई शंका नहीं कि हिन्दू धर्म उन सभी धर्मों में से अत्यंत प्राचीन है। जब विदेशी लोग भारत की सीमा पर पहुँचे तब वे अबाध गति से बहनेवाली सिंधु नदी को देखकर अत्यन्त प्रसन्न व परवश हो गये। फिर उस नदी - प्रवाह का नाम जानकर 'सिंधु' के बदले, उच्चारण की सुविधा को ध्यान में रखकर उसे हिन्दू कहने लगे। कालक्रम में वह नदी, उस नदी का तटवर्ती प्रांत एवं आसपास के सभी प्रदेश 'हैंदव' के रुप में प्रसिद्ध हो गये। इसी क्रम में वह नाम उस सम्पूर्ण स्थान के लिये - जो हिमालय से रामेश्वरम् (सेतु) तक विद्यमान है - प्रचलित होकर 'हिन्दू' देश हो गया। इस कारण से यहाँ के निवासी 'हिन्दू' बन गये।

'हिन्दू' शब्द को अंग्रज़ी में 'HINDU' के रुप में लिखा जाता है। वर्णक्रम की दृष्टि से इस शब्द के हर एक अक्षर का भिन्न-भिन्न अर्थ, विशिष्ट अर्थ - अनेकों लोगों से, निम्नलिखित रुप में बताया गया। यह तो उल्लेखनीय बात है कि यह विवरण अनेक लोगों को पसंद आया। उदाहरणार्थ -

H = History - इतिहास

I = Individuality - व्यक्तित्व

N = Nationality - राष्ट्रीयता

D = Devotion - भक्ति (या) निष्ठा

Divinity = दिव्यत्व

U = Unity - एकता

दूसरे शब्दों में, 'हिन्दू' शब्द में इतिहास, व्यक्तित्व, राष्ट्रीयता, दिव्यत्व एवं एकत्व पांचों - प्राणों के रुप में निहित हैं । भारतवासियों के लिए इतिहास महत्वपूर्ण है । व्यक्तित्व ही असली राष्ट्रीयता है जिसकी वृद्धि करने से ही दिव्यत्व का आविर्भाव होता है । उनकी यह निश्चित धारणा है कि वह पवित्र दिव्यत्व ही एकता रुपी मोक्ष का आधार बनकर खड़ा रहता है । फिर भी, जिस प्रकार हम अन्य धर्मों के लिए विनिर्दिष्ट प्रवक्ताओं (पैगंबर) के नाम बता सकते हैं उसी प्रकार हिन्दू धर्म के लिए किसी प्रवक्ता (पैगंबर) का नाम बताना संभव नहीं । इसी कारण से इस भू भाग के व्यक्तियों ने उस धर्म को, जो इतिहास से परे है - यानी इतिहास की पहुँच से दूर है उसे ''सनातन धर्म'' के नाम से अभिहित किया ।

सनातन धर्म - अनेक शाखायें

सनातन धर्म एक बीज के समान है । जिस प्रकार बीज अंकुरित होकर, तगड़ा बनकर, पृथ्वी को चीरकर, मिट्टी से मजबूत बंधन बनाकर, पल्लवित, पुष्पित एवं फलीभूत होता है, उसी तरह यह सनातन धर्म की कालक्रम में विविध प्रकार के विश्वासों के कारण शाक्तेय, शैव, वैष्णव रुपी अनेकानेक उपशाखायें उपजीं । उन्होंने स्वयं को बनाये रखने एवं स्थापित करने हेतु अन्यान्य प्रयास किये । यहाँ हम यह कह सकते हैं कि ये सभी सूक्ष्म भेद रखनेवाले ही हैं लेकिन अन्तिम लक्ष्य प्राप्ति में इन सभी का केन्द्र एक ही है ।

शाक्तेय, शैव एवं वैष्णव धर्मों में, कौन - सा धर्म प्राचीन है, इसको लेकर भी अनेक निजी मतभेद हैं । शाक्तेय को लेकर अनेक लोग अपना मत इस प्रकार प्रकट करते हैं - पुरुष जाति ने स्त्री देवता यानी देवियों की पूजा - अर्चना, प्रार्थना आदि करना तब प्रारंभ किया था जब

उसने स्त्री को शिशु को जन्म देते हुए पाया और स्त्री को घर - गृहस्थी में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते देखा । स्त्री जैसे - जैसे परिवार में केन्द्रीभूत होने लगी, उसी नेपथ्य में स्त्री देवता पूजनीय हुए और उसी से शाक्तेय धर्म का रुप उभरा ।

कुछ लोगों की धारणा यह है कि 'लिंग' की आराधना, 'शिलायुग' (पत्थरों के विविध उपकरणों का प्रयोग करना) के समय तथा प्रकृति के विविध विस्मयकारी विषयों के अनुशीलन करने की दशा में 'भोजन का उपार्जन' ही अपना जीवन लक्ष्य माननेवाला - 'आदिम मनुष्य' द्वारा प्रारम्भ की गयी ।

शैव धर्म में 'शिव' ही प्रधान है और वही परमेश्वर भी है । उस शिव की अनेक दशायें पायी जाती हैं । सृजन करते समय वही ब्रह्म (विधाता) है । स्थितिकार्य (संरक्षण) करते समय वही विष्णु बनता है । अन्य दशाओं में यानी प्रलय वेला में वही रुद्र बनता है । दूसरे शब्दों में, तिरोधान (विलोडन) में महेश्वर, अनुकम्पा करते समय सदाशिव हैं । वह परमेश्वर साधारण मनुष्य जीवन के लिये निकटतर आकारवाले हैं। वे भक्तवत्सल कहलाते हैं । इसीलिए हमारे पूर्वजों ने प्रकृति के अंगों यानी पहाड़ों, पत्थरों व शिलाओं को शिव के प्रतीक माने । ढ़ेर में लगाया धान लिंगाकार रुप धारण करता है । प्राचीनकाल में प्रचलित माप उपकरण धानपूरा में भरकर, फिर उसे माप से उभारकर चीजों को बेचना हमें पता ही है । वह भी लिंग के आकार में ही होता है । अरे! कुछ लोग यह भी मानते हैं कि भारतदेश का भौगोलिक रुप भी लिंगाकार ही है । कश्मीर, लिंग का ऊपरी भाग है। विंध्याचल प्रांत पानवट्ट[1] है । दक्षिण का भू भाग चबूतरा है । ऐसे लोग ही यह मानते हैं कि भगवान शंकर के जटाजूट से गंगा की तरह जल प्रवाहमान रहकर

1. पानवट्ट = शिवलिंग का निचला चौड़ा भाग

पानवट्ट का चक्कर लगाते हुए बहता हुआ पूर्वी सागर में विलीन हो जाता है ।

शिव आराधना की बढ़ोत्तरी के अनेक कारण हैं। लिंग की आराधना हेतु चतुरता के साथ मूर्ति निर्माण की कोई अवश्यकता नहीं है । इतना ही नहीं, यहाँ तक कि शिव भक्ति में पशु - कीट भी तर गये । दलित वर्ग में तरनेवाले तो अनेकानेक शिवभक्त हैं ही ।

वेदों में भयंकर रुप धारण करने वाले शिव को रुद्र के रुप में स्तुति की जाती है । 'शतरुद्रीय' इसका प्रमाण है । परन्तु अथर्ववेद में भयंकर रुप के साथ - साथ शिव के खर, पशुपति, ईशान, महादेव इत्यादि शान्त व सौम्यरूप भी उल्लिखित हैं । शंकर क्रमिक रुप से शान्त व सौम्य रुपी होकर जनजीवन को अनुग्रहदाता होने के साथ-साथ ललित कलाओं के लिए आराध्य बनना भी एक महत्वपूर्ण विषय है । साधारणतया ऐसा कहना समुचित है कि नृत्य, गीत एवं मनोरंजन, प्रदोष (उषोदय) वेला में करने के कारण भी परमशिव नटराज की आराधना में वृद्धि हुई है ।

आंगिकम् भुवनं यस्य
वाचिकम् सर्ववाङ्मयम्
आहार्यं चन्द्रतारादि
तं वंदे सात्विकम् शिवम् ।।

मंदिर संस्कृति

तमिल भाषा में एक कहावत है - 'कोविल इल्ला ऊरिल कुडि इरुक्क वेण्डाम्' इसका अर्थ है - 'जिस गाँव में मंदिर नहीं, उस गाँव में निवास न करें । 'को' से तात्पर्य है - 'भगवान'। उनके निवास को सूचित

करनेवाला है 'इल' । इसलिये यह 'कोविल' हो जाता है । इसे संस्कृत में 'आलय', 'मंदिर' या 'देवस्थानम्' कहते हैं ।

भारतीयों के लिये 'आलय निर्माण' एक पवित्र पुण्यकार्य है। आलय (मंदिर) निर्माण के पीछे वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों का हित (लाभ) अंतर्स्थापित है। बड़ों ने कहा था -

'कूपस्तटाक मुद्यानं मण्डपं च प्रपा तथा
सद्धर्मकरणं पुत्रः संतानं सप्तधोच्यते ।।'

इनके साथ - साथ सरोवर स्थापना, धन निक्षेप, अग्रहार स्थापना, वन स्थापना, प्रबन्ध रचना, धर्मशालाओं का निर्माण, इन सभी को सप्तसंतान माना गया है । इस दृष्टि से 'मंदिर निर्माण' में शासकों व आस्तिकों की रुचि बढ़ी । भगवान सभी का होने के कारण ईश्वर का कार्य सामाजिक बना एवं यह भी रुढ़ि हो गयी कि 'ईश्वर के विवाह में सभी आदरणीय' (बड़े) हैं ।

हिन्दुओं ने मंदिर निर्माण द्वारा अनेक लाभों की अपेक्षा की थी। मंदिर को निराधारों का निलय, साक्ष्यमंच, आध्यात्मिक चर्चा - परिचर्चा केन्द्र, पवित्र चिकित्सालय, योग - साधनालय, सर्व-कला - प्रदर्शन - मंच, विद्यालय एवं श्रद्धा केन्द्र के रुप में माना गया । इसी कारण मंदिर (आलय) व्यवस्था को राज्य प्रणाली की तुलना में सुदृढ़ भी बनाया । मंदिर निर्माण के लिए चोल एवं पाण्ड्य राज परिवारों ने आपस में अपनी अनुपम भक्ति प्रपत्तियों का परिचय कराया । होड़ लगी जब, तो आलय - कला भी अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित हुई । समूचे भारत में, विशेषकर दक्षिण भारत, गगनचुंभी गोपुरों के लिए अत्यन्त विशाल मंदिर प्रांगणों के लिए वैभवपूर्ण उत्सवों के लिए प्रसिद्ध रहा है । वहाँ सनातन धर्म के मूल सूत्रों को बिना हानि पहुँचाये वेदागम - सम्प्रदाय विस्तृत हुए ।

इसमें दूसरी राय नहीं कि तमिलनाडु में भले ही शक्ति के मंदिर, वैष्णव मंदिर एवं शिव मंदिर हों, लेकिन उनमें शिवालयों की संख्या ही - अधिक है । दक्षिण में शैवधर्म को सर्वजनानुमोदन प्राप्त होना एक महत्वपूर्ण विषय है । और तो और यह वेदों का अनुकरण होने के कारण पंड़ित - अशिक्षित दोनों वर्गों को एक कर सका । दलितों तथा अन्य अनेकानेक पेशेवरों व बुद्धिजीवियों को भी एक सूत्र में बांधने में सफल हुआ । इसके अतिरिक्त यह भक्ति आंदोलनों का केन्द्र भी बना।

मंदिर एवं भक्ति आंदोलन

*पुरुषार्थ चार प्रकार का है जिनमें 'मोक्ष' अंतिम है । जब मोक्ष प्राप्त करना ही कर्त्तव्य व लक्ष्य बनता है तब उसे प्राप्त करने के अनेक मार्ग सूचित किये जाते हैं । हवन, यज्ञ, योग आदि आम व्यक्ति की पहुँच के बाहर हैं । इसके अतिरिक्त इनमें से अधिकांश को आयोजित करने के लिए जब जाति, कुल, धर्म व लिंगभेद रुकावटें बन गयीं तब कलियुग के मनुष्यों के लिए 'भक्ति' ही एकमात्र साधन बन गयी इसलिये क्योंकि वह 'सर्वजन सुलभ' था ।

'भक्ति' शब्द 'भज्' नामक मूलधातु से उत्पन्न हुआ । (भज = सेवायाम्) भक्ति का अर्थ सेवा ही है । यह **'पाणिनी' का विचार था। कुछ तो इसे 'भंज' नामक धातु से उत्पन्न मानते हैं । 'भंज' शब्द का अर्थ है - अलग करना, तोड - फोड़ करना । साधनावस्था की सेवा क्रमशः सिद्धावस्था में भगवान तक पहुँचाती है । अतः भक्ति से तात्पर्य 'युक्त होना', या 'संग्रहीत हाना' भी है ।

---

* पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष

** पाणिनी - संस्कृत का महान व्याकरणकर्ता

कालिदास ने रघुवंश में 'भवति विरल भक्तिः म्लान पुष्पोपहारम्' (रघुवंश- 6.74), 'आबद्ध मुक्ताफल भक्ति चित्रे' (कुमार संभवम् 7-10), 'भक्ति शोभासनाथम्' (कुमार 7-94) आदि के द्वारा इस शब्द का प्रयोग जोड़ना, पिरोना, गूँथना एवं रखना के अर्थ में किया । इस प्रकार विभक्त होना, सेवा, मिलना एवं रचना विशेष आदि 'भक्ति' के विविध अर्थ हैं ।

'भागवत्' यह स्पष्ट करता है कि ईश्वर साक्षात्कार के लिए तथा उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए 'भक्ति' से बढ़कर कोई अन्य साधन नहीं है । भगवान की सेवा करके तर जाना ही भक्ति है । सायणाचार्य ने यह कहा कि ''फलाशा के प्रति निस्पृह होकर'' रहना ही भक्ति है । शंकर भगवत्पाद ने कहा कि 'मोक्ष साधन सामर्ग्याम् भक्ति रेव गरीयसी'। (मोक्ष को प्राप्त करानेवाले साधनों में भक्ति ही श्रेष्ठ है) वस्तुतः स्वरुप चिन्तन ही भक्ति है । आत्मतत्व का चिन्तन - मनन ही भक्ति है भक्ति प्रेम स्वरुप है, तेल की धारा के समान है । देवर्षि नारद ने 'नव - विध भक्ति पद्धतियों' से परिचय कराया है, यथा -

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम् ।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम् ।।

इन नौ मार्गों में चलकर यानी इन पद्धतियों को अपनाकर भक्त अपने भगवान की कृपा को प्राप्त करता है । उस प्रकार के भक्त या तो शैव हो सकते हैं, या वैष्णव या शाक्तेय हो सकते हैं अथवा अपने आराध्य का चयन करनेवाला कोई भी हो सकता है ।

इतिहासकारों का मानना है कि यह ''भक्तितत्व'' भले ही वेद, पुराण व इतिहासों में उपलब्ध हो, लेकिन यह दक्षिण से ही अन्यत्र गया

है । इस दिव्य तत्व को नायन्मारों एवं आलवारों ने मन, वचन एवं कर्म के द्वारा प्रचार किया था ।

नायन्मार

'नायन' शब्द का तमिल भाषा में अर्थ है - नायक । वह या तो पिता हो सकता है, पति हो सकता है अथवा शासक (राजा) भी हो सकता है । परमशिव भी नायक है । नायक वही है जो लोगों का नेतृत्व करके, उन्हें आगे ले जाता है । नायन शब्द से 'नायन्मार' शब्द उत्पन्न हुआ है । तमिल शब्द कोषों में इस शब्द के, राजा, स्वामी (मालिक) अय्यणार, देव, शिव, महान, नेता, शिवभक्त, सन्यासी, ईश्वरीय भाव वाला इत्यादि अर्थ हैं । शैव साहित्य में तिरसठ (63) नायन्मार हैं जिन्हें 'अरुवत्तुमूवर' (तिरसठ) कहने की परंपरा है । शिव मंदिरों में इनकी मूर्तियों को देख सकते हैं । वस्तुतः ये सभी समकालीन नहीं हैं । इनमें उच्चकुल के, अन्य कुल व जात के एवं दलित वर्ग के भी भक्त हैं । फिर भी अपनी भक्ति की विशिष्टता के कारण वे अन्य भक्तों के समान आदर प्राप्त कर सके । यही इनकी विशेषता है । ऐसे भक्तों में 'नंदनार' एक है ।

नंदनार का निवास स्थान

जिस प्रकार तेलुगु भाषी आंध्र प्रदेश के गोदावरी के दोनों जिलों को धान के भण्डार मानते हैं उसी प्रकार तमिल भाषी तमिलनाडु के तंजाऊर प्रान्त को 'धान का भण्डार' मानते हैं । इसका व्यावहारिक रुप 'नेल कलंजियम' है । यह पशु - पालन व खेतीबाड़ी के लिए ही नहीं बल्कि तमिल संस्कृति के लिये भी केन्द्र रहा । ऐसे तंजाऊर से थोड़ी दूरी पर 'कोतेरुर' नामक नदी के तट पर 'आदनूर' नामक एक गाँव है । उससे सटकर दलितों की एक बस्ती थी । तमिल में दलितों को 'परैयर' कहते हैं ।

प्राचीनकाल में अनेक कारणों से कुछ लोग समाज से बहिष्कृत हुए । मुख्य नगर में उनका निवास निषिद्ध था । शिक्षा - दीक्षा से तो वे कोसों दूर हो गये । निर्धनता एवं तामसभाव के कारण वे जीवन में आगे बढ़ न सके । कोई भी उनका दुखड़ा सुनने को तैयार नहीं था । और तो और, उन्हें धनी व उच्च जाति के लोगों की दासता भी करनी पड़ी । यह एक दुर्भाग्य का विषय था । उनके लिए 'चाकरी' करना ही जीवन का परमार्थ बन गया । इसी क्रम में वे 'अस्पृश्य' भी बन गये । अधिकारियों की आज्ञा उनके लिए शिरोधार्य बनाना पड़ा । साथ- साथ तत्कालीन धार्मिक व सामाजिक परिस्थितियों ने भी, दलितों को समाज से दूर कर दिया । उनके लिए मंदिर में प्रवेश निषिद्ध था । यहाँ तक कि वे मंदिर के निकट भी नहीं जा सकते थे । फिर मंदिर के भीतर जाकर भगवान के दर्शन करने का प्रश्न ही नहीं था । परन्तु धनी व्यक्तियों के खेतों-खलिहानों में काम करना, भेड बकरियों को ले जाकर चराना, मरे हुए पशुओं को दफ्नाना, मंदिर के वाद्यों के लिए आवश्यक तंत्रियाँ, व चमड़ी उपलब्ध कराना, आदि ही उनके काम थे ।

उनके स्वामी (मालिक) साफ - सुथरे वातावरण में रहते थे और दलित बस्तियाँ एकदम गंदे व अशुद्ध बन गये । आदनूर से सटकर रहनेवाला गाँव गंदगी की प्रतिच्छाया बन गई । जहाँ देखो वहाँ पशुओं की हड्डियाँ, चमड़ियाँ, मांस, कुत्तों का भौंकना, कीचड़ में झोंपड़ियाँ, मछलियों के लिए बड़ी संख्या में आकाश में मँडरानेवाले चील - कौए एवं हर छोटी मोटी बात पर गाली - गलौच, मार-पीट, एवं आवेग में आकर तुरन्त फैसले कर देना... बस, यही उनका जीवन था । एसी ही एक निकृष्ट एवं भयंकर दलित बस्ती में 'नंदनार' का जन्म हुआ । इसके माता - पिता के बारे में कोई जानकारी नहीं थी । फिर भी नंदनार अन्य बच्चों से भिन्न था । शिवभक्त के रुप में यह पला बढ़ा ।

आदनूर दलित बस्ती के निकट एक विशाल वृक्ष था । उसकी छाँव में दो बड़े - बड़े पत्थर थे जिनपर दो मनुष्य झूलते - झूमते बड़ी असहनीय व विकृत स्थिति में बेहोश पड़े थे । रात धीरे - धीरे घटती जा रही थी । इतने में दूर से एक भक्ति गीत सुनायी पड़ी -

''शिव शिव!'' यदि रहे तेरे चरणों का स्मरण
मुक्ति लाभ होता अवश्य, न डराता मरण
शिव - शिव बोलो न!
क्या, कडुआ है नाम शिव का?

पेड़ के तले शराब पीने के कारण, तंद्रिल पड़े वीरेश और पुल्लैया के कानों तक यह गीत पहुँची ।

वीरेश ने चिल्लाया - अरे ओ पुल्लैया! यह क्या शोर मचा रहा है तू? कुत्तों के भौंक से सारी रात आँखों में ही कट गयी । अगर थोड़ी सी ही नींद आए तो मच्छरों की मेहरबानी, नींद कोसों दूर भाग गयी । ये देख, पूरे बदन में चकत्ते ही चकत्ते हैं । मुँह तो फूल गया । बड़े सबेरे सोने ही वाला था तो ये क्या तमाशा कर रहा तू? ये पागल - सा तू क्या गा रहा रे! शरम नहीं क्या?

'अरे! मामा! तुम मुझे क्यों गाली दे रहे हो? क्या मैं ने तुम्हें कुछ कहा? मैं भी तुम्हारा जैसा सो गया । नींद न लगी । इधर - उधर लोटते - लोटते आखिर हाथ को ही तकिया बनाके सो गया । जब मैं ने कोई गाना सुना तो समझा, तुम ही गा रहे हो । क्या तुम ने ही तान छेड़ा है?' पुल्लैया चीख पड़ा ।

'ये क्या बक रहा है तू? क्या मैं तान छेडूँ? पागल हो गये क्या? पहले कभी मैं ने ऐसा गीत गाया था क्या? धत तेरे की...'

''छोड़ो छोड़ो मामा! अब ये बातें छोड़ो । अच्छा तुम कोई अपना मन पसंद गाना सुनाओ न!'' पुल्लैया ने आग्रह किया ।

अब तो ठीक बोला तू - सुन!
देख ले कोंपल इमली का तू
देख ले उमर छोटी रानी - की तू

तभी एक गधा रेंक उठा ।

अरे मामा! चुप... चुप... बंद करो बंद करो, क्या तुम भूल गये, कि एक महीने पहले जब तुम ने यह गीत गाया तो बस्ती का मुखिया आपे से बाहर हो गया । फिर यह कहकर उसने खूब तुम्हें आड़े हाथों लिया कि तुमने उसकी बिटिया रानी पर ही गीत गाया । अरे, चुप... वो सब मत बोल । अरे भई, मेरा मुँह भी बंद, तेरा मुँह भी बंद । मैं ने भी नहीं गाया, तू ने भी नहीं गाया । अरे... बोल... हमारी बस्ती में कौन माई का लाल है जो ऐसे बेवक्त गाना गा रहा है?''

अरे हाँ... मामा! याद आया । हमारी बस्ती में माथे पर बभूत लगाये, गले में रुद्राक्षमाला पहने गली - गली फिरता है न । उसी का है यह स्वर । मैं पहचान गया । मैं पहचान गया ।

'यह साला हमारी जात को खराब कर रहा है हमारी नाक कट रही है इसकी वजह से । मुर्गे की बाँग के साथ उठ जाता है । बगलवाले झरने में नहा लेता - माथे पर बभूत लगाकर बस... गाता रहता है । चल... इधर आने दे उसको । हमारी नींद खराब कर दी उस हरामजादे ने...।'

''गाली मत दो मामा! हमें तो पसंद न आयी । लेकिन उसका सुर देखो, कितना अच्छा है । अरे मामा! वो देखो... नंदनार हमारी तरफ ही आ रहा है?

''आने दो साले को... उसकी हड्डी पसली एक कर दूँगा ।''

शिव! शिव! बोलो न!!
क्या कडुआ है नाम शिव का?
नंदनार गाता हुआ आ रहा था ।

''अबे ओ गधे... चुप! यह क्या करता तू! हमारी नींद खराब कर रहा है? दिनभर खून - पसीना एक करके आये । शाम ढ़लते ही शराब पीकर लेट गये तो फिर यह क्या है? शिव, शिव... कह रहा है तू । शिव शिव कहे तो तू शव... शव बन जाएगा । कौन है रे वह शिव!'' चीख पड़ा वीरेश ।

''शिव! शिव!'' ये क्या कह रहे हैं आप? यह बड़ा अपराध है बहुत बड़ा अपराध है ।

'अरे भैया! हम भी शिव हैं, देखो नंदनार! तेरा शिव नंगा है, हम भी नंगे हैं ।' वीरेश बोला ।

'तेरे शिव को गाँव में जगह नहीं । गाँव की उत्तर दिशा में वह रहता है । हम भी उत्तर में रहते हैं ।' पुल्लैया बोला ।

'भोजन रखने को बरतन तक नहीं । हमारे भी नहीं ।' 'साँप के साथ रहता तेरा शिव । हम तो रहते सुअरों के साथ... बस...' पुल्लैया बोला ।

'तेरे शिव ने जहर निगल लिया और हम तो अफ़ीम निगल लेते, समझे?'

'मरे हुए लोगों को गाडने की जगह तेरे शिव का निवास स्थान है । मरे हुए जानवरों से दोस्ती है हमारी शब्दों की खींचातानी ।'

'केवल इतना ही नहीं, बल्कि चमड़ी उतारना हमारी बारी है । उतारी हुई चमड़ी पहनना तेरे शिव का काम है । अरे, पुल्लैया! तू बोल रे । हमारी बस्ती में रहनेवाला हर आदमी शिव ही है । क्यों नंदनार?'

''अरे उससे क्या पूछते मामा! बहुत बढ़िया कहा तुम ने शिव पर मोह रखनेवाली उसकी प्यारी बीबी है, हमारी नहीं । वरना हम इस पेड़ के नीचे ऐसा पडे नहीं रहते ।'' नंदनार ने बड़े सहनपूर्वक बात सुनी ।

''हाँ - हाँ सच कहा तुमने । और तो और... हर प्राणी शिव ही है । बिना शिव की आज्ञा के एक पत्ता भी नहीं हिलता । हाँ...''

'अरे ओ पुल्लैया! समझे क्या मेरी समझदारी?' नंदनार ने भी सिर हिलाया । 'अरे हाँ! नंदनार! ये क्या भेस बना लिया तूने! ये बभूत! ये कपड़े? क्या है यह सब? कभी किसी ने ऐसा किया क्या हमारी घर - बिरादरी में? गाँव में जाना... पटेल पटवारी की, मालिकों की सेवा करना बस, यही हमारा काम है । बड़े बड़े लोगों के खेतों खलिहानों में दिनभर जी तोड़कर, पसीना बहाना, हमारा काम है न । उनकी गाय - बकरियों को चराना भी हमारा कर्त्तव्य है । है कि नहीं? ठहरो मामा! मरी हुई भैंसों भेड़ बकरियों को गड्ढ़ा खोदकर गाड़ना पड़ता है न! अरे नंदनार! हमारे काम को और तेरे इस भेस को नहीं जमता । क्या तेरा यह भेस हमारा पेट भरता है ? हमें कपड़ा देता? देखो भई... सुबह - सुबह मैं कहता हूँ... तू हमारे साथ चल । हम जैसा करें वैसा तू कर । वरना तू कुत्ते की मौत मरेगा । तू मरेगा तो हम तेरी लाश को छूएँगे तक नहीं । अभी बोल देते हैं हम । याद रखो - बाद में नहीं कहना कि हम ने तुझसे नहीं कहा, हाँ...' पुल्लैया रुक रुककर बोला ।

नंदनार बोला - ''शिव! शिव! मुझे ऐसा जीने दो । कौन कैसा जिएगा, कैसा मरेगा - ये तो शिव ही जाने । मैं तुमको बिलकुल तकलीफ नहीं दूँगा । ईश्वर जो चाहेगा, वही होगा ।''

''अरे पुल्लैया ! मैं बोला न... यह नंदनार सिरफिर और असभ्य आदमी है । जितना भी बोल, कान पर जूँ तक नहीं रेंगता । वो देख... पेड़ के पत्ते धीरे - धीरे हिल रहे हैं । ठंड़ी - ठंड़ी हवा बह रही है । चल आराम करेंगे । थोड़ी देर ही सही... हम सोयेंगे ।'' वीरेश बोला ।

''जाने... इस बस्ती के लोगों को अक्ल कब काम करेगी ? 84 लाख जन्मों के बाद प्राप्त होता है यह मानव जन्म । इस जन्म को मैं बिलकुल बरबाद करना नहीं चाहता । वह शिव ही इनको बचायें । यह सारी बस्ती सुख - शान्ति से रहे । शिव! शिव! ओम् नमःशिवाय ।'' कहता हुआ नंदनार चला गया ।

आदनूर खलिहानों के परिसर

आदनूर धान फसल के लिए विख्यात है । शिशु की तरह कृषक उसे पालते हैं । इसी कारण धान के मालिक उस पर बहुत ध्यान देते हैं और सावधानियाँ बरतते हैं । वे कृषक - मज़दूरों को विविध कार्यों में नियुक्त करते हैं । उस गाँव में कुछ खेत हैं । जिनके स्वामी एक उच्च कुल वाला है । उसके पूर्वजों को किसी ने इन्हें उपहार के रुप में दिया था । मंदिर में अर्चना - आराधना करना उनका उत्तरदायित्व है । परन्तु कालक्रम में वे मंदिर अदृश्य हो गये । पानी तो सूख गया लेकिन काई यथावत् है । मंदिर खण्ड़हर बना लेकिन उसका वैभव यथावत् है और पुजारी मंदिर के खेतों से चिपका हुआ है । फिर भी अग्रहार[1] निवासी, मोरैया नामक व्यक्ति की सहायता से कार्य संभाल रहा था ।

पौ फट रही थी । आकाश में सूर्य शनैः, शनैः, अपनी किरणें फैला रहा था । आदनूर में तब तक महिलायें खेतों की तरफ चल पड़ी थीं । एक स्थान पर छुट (छोटी) दीदी - बड़ (बड़ी) दीदी वार्तालाप कर रही थीं :

---
1. अग्रहार - ब्राह्मणों की बस्ती

छुट (छोटी) दीदी : बड़ दीदी! वो देख! सूरज की किरणें बरछी - जैसी चुभ रही हैं री! लगता है आज धूप हमसे ज्यादा नाराज़ है इतना कि वह मानो हमसे बदला ले रहा हो । बारिश आएगी क्या?

बड़ (बड़ी) दीदी : हाँ, हाँ क्यों नहीं आएगी? बारिश आएगी - नदी - नाले सब भर जायेंगे । पोखर भी भर जायेंगे। हमारे मालिक के खेत में अच्छी फसल होगी । तुझे - शंका क्यों आयी छुट (छोटी) दीदी?

छुट (छोटी) दीदी : जाने दे बड़ दीदी! बारिश का नाम लेते ही मेरा दिल शांत हो जाता है । बड़ा आनंद मिलता है। खैर... वो बरसात का गीत है न । जरा गाओ न! थोड़ा मज़ा करेंगे ।

बड़ (बड़ी) दीदी : ठीक है ठीक है... रामक्का, छुट (छोटी) दीदी, लछमी दीदी, एक तरफ...

मैं, रामुलम्मा, सीताबुआ, पेरक्का दूसरी तरफ समझी... मैं शुरु करती हूँ । तुम पीछे लग जाओ...

बारिश आवें बरखा देव, धान - खेत भर जावें देव!

बारह धान बरखा देव, खूब पैदा हो बरखा देव!

पेट भर जाए बरखा देव, पोखर भर जायें बरखा देव!

निर्धन जियें बरखा देव, दरिद्र भी जियें हे बरखा देव!

मिल जाय मजदूरी बरखा देव, रोटी की कमी न रहें बरखा देव!

भागा जो मेरा मर्द बरखा देव, मुड़कर आ जाये बरखा देव!

गाँव के लिए गया मेरा मर्द बरखा देव, दौड़कर लौटे बरखा देव!

पूरब में बादल हैं बरखा देव, उमड़-घुमड़ बरसें बरखा देव!
पश्चिम में बादल हैं बरखा देव, गरजें बरसें बरखा देव!
उत्तर में बादल हैं बरखा देव, उमड - घुमड बरसें बरखा देव!
भर जाय झरना बरखा देव, अच्छी फसल हो बरखा देव!

इतने में मोरैया के साथ आते हुए मालिक दिखायी पड़े । छुट दीदी ने झट कहा - ''बड़ दीदी! गाना बंद कर दे । वो देखो । मालिक आ रहे हैं । साथ मोरैया भी है । हमें गाना गाते हुए देखें तो गरज उठेगा । चलो, चलो खेत में उतरो ।'' छुट (छोटी) दीदी बोली । ''अरे छुट दीदी! ये क्या बोल रही तू? हमें क्यों डराती रे? क्या हम कोई गलत काम कर रही हैं? बारिश के भगवान से हम मनौती कर रही हैं कि सारी दुनिया सुख शान्ति से रहे । मालिक महाराज के खेत में अच्छी फसल आयेगी । फिर हमें तो थोड़ा बहुत धान मिलेंगे ।'' बड़ दीदी बोली ।

'वह तो ठीक है । मालिक महाराज को तो हमेशा अपना ही फिक्र है । वो अपने मामले में ही उलझा रहता है । फिर गाँववालों का क्या सुनेगा, गाँववालों की क्या भलाई करेगा? बड़ दीदी! वो देखो, वहाँ... मालिक महाराज शायद गाँववालों से उनका कोई बखेड़ा चल रहा है । कोई चीखता - चिल्लाता आ रहा है । क्या तुझे सुनायी नहीं दे रहा है?' छोटी दीदी बोली, 'अरे ओ! भैंसा? अभी काम शुरु नहीं किया क्या?' मालिक चिल्ला रहा था । 'महाराज! वो बदलते नहीं । काला अक्षर भैंस बराबर, आखिर भैंसों से तो दोस्ती करते हैं न । जितना भी चीखो - चिल्लाओ, उनके कान पर जूँ तक नहीं रेगता ।' मोरैया कह रहा था ।

'लातों का भूत बातों से कैसे मानेगा?' मालिक गुस्से में झूमने लगा । रंगैया गिड़गिड़ाते हुए बोला - 'महाराज! भगवान के लिए ऐसा न कहें । हम जो गरीब ठहरे । हमारा न खेत है न घर ही । यह गाँव

छोड़कर हम कहीं भी नहीं जा सकते । हमने इस मिट्टी में जनम लिया फिर इसी मिट्टी में मिल जायेंगे । आखिर हम आपके पैरों के पास पड़े रहनेवाले हैं । आपके चाकर हैं हम महाराज ।' रंगैया बड़ी दीनता से हाथ बाँधकर गिड़गिड़ा रहा था ।

'कितना अच्छा होता, सभी लोग तुम्हारे जैसा सोचते? अरे हाँ? रंगैया! वो काला - कलूटा है कहाँ? नहीं दिख रहा?' 'कौन महाराज? वो... नंदनार ही है न । वैसे हम दोनों मुँह अंधेरे निकल पड़े । वो मंदिर का वाद्य बजाने वाला महाराज है न! उसने बुला भेजा नंदनार को । मृदंग के ऊपर दूसरी चमड़ी कसकर बाँधने को वह कहा । भगवान का काम जो है । 'मैं काम पूरा करके आऊँगा' कहकर नंदनार वहाँ गया ।'

'आएगा... आएगा आने दो... आने दो बत्तमीज को, मृदंग की तरह उसे बजाऊँगा । अरे? बड़ा कौन है? वह मंदिर का मृदंगवाला या हमारा मालिक महाराज? इतना भी न जानता तो कैसा? आने दो उस बेशर्म को, आज मैं उसे एक सबक सिखाऊँगा हाँ' मोरैया कडकते स्वर में बोला ।

इतने में नंदनार आया ।

उसे देखकर दिल्लगी करते हुए बोला - 'आओ बेटा आओ । क्या समझ लिया तूने? यह कोई उत्सव या विवाह थोड़े ही है । बड़े आराम से आ रहे हो? कहाँ घूम रहे थे?'

'सरकार, माफ कीजिएगा, देरी हो गयी मंदिर में बाजा बजानेवाले के बुलाने पर गया । उसने कुछ काम दिया । मैं पूरा करके निकलने ही वाला था कि फिर बुलाकर वीणा के तार बाँधने को कहा । वो भी करके आ रहा हूँ । थोड़ी देरी हुई ।' नंदनार बड़ी विनम्रता से बोला ।

'अरे मूरख! क्या बात कर रहा तू! मंदिर क्या है रे? छोड़, तेरे लिए खेत, मंदिर से बढ़कर है । समझे! क्या वो लोग तुमको मंदिर के भीतर आने देंगे? खेत में तो हम आने देते हैं । है न? मेरा कहना मान। उस मंदिर के वादक की बात कभी मत सुना तू बरबाद हो जाएगा, समझे! वे सभी आराम से भर पेट खाकर, डकार लेते हैं जबकि तुम लोग तो खून - पसीना करते हो । देखो... मेहनत करना - पसीना बहाना ही शाश्वत है', मालिक ने ऊँची आवाज़ में कहा ।

'अरे बड़े साहब । शास्त्र के अनुसार - उस गाँव में हमें नहीं रहना है जिस गाँव में मंदिर नहीं हो । गुरुजी जब बता रहे थे तब मैं ने दूर खड़े होकर सुना कि जीवन में माँ की गोद, शिक्षा देनेवाला विद्यालय और पवित्र मंदिर - ये ही शाश्वत हैं ।' 'वो सब तेरे वास्ते नहीं रे! बड़े - बड़े लोगों के लिए हैं वो । सोना- चाँदी के सिक्के गिननेवालों के लिए है' मोरैया ने कहा ।

'तो फिर हमारे लिये क्या है?' पूछा रंगैया ने ।

'पसीना बहाना, काम करना, गीत गाना... बस, यही है तेरा काम', मोरैया ने हर शब्द को जोर देते हुए कहा ।

'बस... इतना ही! तो, हम अपना काम पूरा करके कहीं भी जा सकते हैं न!' रंगैया ने बड़ी उत्सुकता से पूछा ।

'क्यों नहीं जा सकते हो ? अरे... सच सच बता । तेरी बातें सुनने से ऐसा लगता है कि तुम सब मिलकर एक साथ गायब हो जाओगे । यह तो असंभव है । तुम्हारे बाप - दादाओं का ऋण कौन चुकायेगा? यह तो जनम - जनम तक रहनेवाला है ।' अपना गला ठीक करते हुए मालिक ने कहा ।

'महाराज! रंगैया को माफ कर दें । वह तो ऐसे ही बकता है । हम तो बस... एक पल में खेत का काम पूरा कर देंगे । लेकिन... हमारी एक विनति है सरकार!' नंदनार ने कहा । 'ठीक बोल तू । जल्दी बोल... क्या करना चाहता है तू?'

'हमारी बस्ती से दस मील की दूरी पर 'तिरुप्पंगूर' है न महाराज! मुझे वहाँ जाना है'... नंदनार ने कहा । उसे टोकते हुए मालिक ने पूछा- 'क्या बात है? वहाँ की किसी लड़की से शादी करोगे क्या?'

'अरे सरकार! खोटी जात के खोटे आदमी को अपनी लड़की का हाथ कौन ही देगा?' मोरैया ने मजाक उडाया ।

'न... न... ऐसी कोई बात नहीं । मैं, रंगैया, सोमैया, सब मिलकर तिरुप्पंगूर जाकर शिवैया का दर्शन करेंगे, उनकी अर्चना करके आएँगे ।'

'सरकार! दाल में कुछ काला है । आप हाँ कहेंगे तो ये सभी जाकर शायद वहीं अड्डा जमा लेंगे, वापस नहीं आयेंगे ।'

'अरे भैया मोरैया! तुम तो यों ही डरते हो, तिरुप्पंगूर मेरे मामाजी का गाँव है । ये लोग वहाँ ठहर जायेंगे तो क्या मैं चुप रहूँगा? कुत्तों की तरह मैं उन्हें भगाऊँगा वहाँ से, वैसे तो, ये लोग मंदिर जा रहे हैं न । इन्हें नहीं रोकना है, हमें पाप लगेगा । अगर सेठानी को पता चल गया, तो तेरी मेरी धुलाई होगी । हाँ ।' 'ठीक है नंदनार! काम पूरा करके जाओ । वहाँ केवल एक ही दिन रहना । एक दिन से बढ़कर ज्यादा रहे तो समझो, हड्डी पसली एक कर दूँगा, चमड़ी उतार दूँगा । मेरे मामा वहीं हैं पर उसकी नज़र तुम पर ही रहेगी । उससे बच नहीं सकते, समझे...!'

'जी... सरकार सब भगवान शंकर की किरपा है । सूरज के डूबने तक काम पूरा करके, सबेरे तिरुप्पंगूर चलेंगे । चलो... भाई... चलो... ।'

'भाग्य कहें तो हमारा ही भाग्य है

शंकर भगवान का दर्शन... सौभाग्य है

हमारा भाग्य ही भाग्य है भाई!'

तिरुप्पंगूर यात्रा

प्रभात होनेवाला था ।

नंदनार सबसे पहले जाग उठा, दोस्तों को जगाया, फिर सभी ने मिलकर आदनूर के एक पोखर में स्नान किया । माथे पर बभूत लगाकर, शिव पंचाक्षरी (ऊँ नमः शिवाय) जप करते हुए आगे बढ़े । परन्तु उनमें से किसी को तिरुप्पंगूरु के मार्ग का पता नहीं था । उन्होंने सोचा कि रास्ते में कोई बता देगा । परन्तु वे निराश हो गये । किंकर्तव्यविमूढ़ भी हो गये । इतने में एक केसरियावर्ण वस्त्रधारी सन्यासी वहाँ आया ।

'आप लोग कौन हो? कहाँ जा रहे हो?' सन्यासी ने पूछा ।

'हम हैं आदनूर के निवासी । तिरुप्पंगूर जाने को निकल पड़े । हमें रास्ता मालूम नहीं है । यदि आपको पता है तो कृपया बता दें ।' नंदनार एवं उसके मित्रों ने विनम्रतापूर्वक पूछा ।

'ठीक है । मैं भी वहीं जा रहा हूँ । मेरे साथ चलिये ।'

ये बातें सुनते ही नंदनार और उसके मित्रों को मानो जान में जान आ गयी । सभी ने सन्यासी का पीछा किया ।

थोड़ी देर बाद नंदनार ने उस सन्यासी से तिरुप्पंगूर क्षेत्र के बारे में बताने को कहा । 'ठीक है' कहकर - सन्यासी बताने लगा ।

'तिरुप्पंगूर एक सुविख्यात शैव क्षेत्र है जिसके स्वामी 'शिवलोक नाथन' हैं । यहाँ विराजमान भगवती है सोक्कनायकी, यह सुविख्यात

वैदीश्वरन मंदिर से लगभग तीन मील की दूरी पर है । इस मंदिर का स्थल वृक्ष बीच वृक्ष है । इस भगवान के उत्सवों में रथोत्सव बहुत ही प्रसिद्ध है । यह क्षेत्र कोई साधारण क्षेत्र नहीं है । नायन्मारों में सुप्रसिद्ध संबंदर, सुंदरर एवं तिरुनावुक्करसर ही नहीं बल्कि दलित कुल के एदुर्कोन कलिक्काम नायनार यहाँ विराजमान ईश्वर की अनेक प्रकार की सेवायें करके तर गया । विभूति धारण करनेवालों के चरणों को पवित्र आश्रय मानता था । इस क्षेत्र का दर्शन पुण्यदायक है' - सन्यासी ने यह बात कही । बड़ी उत्सुकता से नंदनार के मित्रों ने कहा - 'स्वामी! हम बड़े अज्ञानी हैं । कृपया हमें शिव की लीलाओं की जानकारी दीजिए ।'

'ठीक है । बताऊँगा । सुनिये । भगवान शिव को ही भक्तवत्सल व महादेव कहते हैं, अन्य किसी को नहीं । वे बड़े करुणासागर हैं । पुराणों में वर्णित एक कथा मैं सुनाऊँगा । आप श्रद्धाभक्ति से सुनिये :'

'हाँ हाँ... स्वामी, कहियेगा, हमें कथायें बहुत पसंद हैं ।' रंगैया, और सोमैया ने कहा ।

'शिव अनंत, शिव लीला अनंता ।' भगवान शिव की लीलायें, महिमायें अनंत हैं, अद्भुत हैं । एक बार वे 'बाघ' बने थे ।

'महाराज! यह क्या है? आप ही ने कहा था भगवान शिव भक्तवत्सल हैं, फिर, वे 'बाघ' क्यों बने? बाघ, शेर वगैरह तो बड़े क्रूर पशु हैं न?'

'हाँ । लेकिन इसका एक कारण है । एक बार एक मादा हिरन ने एक बच्चे को जन्म दिया था । जन्म देने के उपरान्त उसे बहुत प्यास लगी । इस कारण वह अपने शिशु - शावक को वहीं छोड़, पानी पीने नदी के निकट गयी, जब वह पानी पी रही थी तब एक शिकारी ने उसे अपने तीर का निशाना बनाया । तीर लगते ही वह मादा हिरन जमीन पर गिरी और छटपटाती हुई मर गयी । उसके प्राण पखेरु समान उड़

गये । परन्तु उसका नवजात शिशु अपनी माँ के लिए, दूध के लिए तड़पने लगी । भगवान ईश्वर ने यह दृश्य देखा । उसके मन में दया फूट निकली । फिर वह स्वयं बाघिन बना ।

'लेकिन... स्वामी! बाघ या शेर की हिरन से बड़ी शत्रुता है न! हिरन को देखते ही वह टूट पडता है न! बाघ को देखकर हिरन का बच्चा थर - थर काँप उठता है न!' विस्मित होकर रंगैया ने पूछा ।

'हाँ, यही विचित्रता है । वह चाहे तो मादा हिरन बन सकता था । लेकिन आश्चर्य...। वह बाघिन बना । वैसे, वहाँ शेर - बाघों का संचार बहुत होता था । जहाँ देखो वहाँ शेर - शेरनियाँ, बाघ - बाघिन बड़ी संख्या में थे ।'

'उफ्! हिरन की बच्ची डरती नहीं क्या?' सोमैया पूछ बैठा ।

'नवजात शिशु की आँखें बराबर नहीं खुलतीं । वह ठीक तरह देख न पाती न? इसलिए 'बाघिन' बनकर उसने स्वयं हिरन की बच्ची को अपना स्तन्य पिलाया ।'

'वाह! कमाल कर दिया शिवजी ने ।' रामैया बोला ।

'बड़ी ही विचित्र घटना है ।' रंगैया बोला । 'यहाँ एक रहस्य है। बाघिन का उसके निकट रहने से कोई दूसरा शेर नहीं आता । केवल इतना ही नहीं बल्कि, शेरनी के आश्रय में उसे किसी भी प्रकार की हानि या कष्ट नहीं होता ।'

रोमांचित करनेवाली है यह कथा ।

जिसका कोई सहारा नहीं, रक्षक नहीं, उसका

तो स्वयं ईश्वर ही सहारा है, रक्षक है ।

'भगवान शिव तो निर्धनों का देव है ।' नंदनार ने कहा । 'हाँ तुमने सही कहा । और एक कथा मैं सुनाऊँगा । प्राचीनकाल में एक बेसहारा, निराश्रयी महिला थी । उसका नाम था - 'वंदी' । नदी के तट पर ही उसका वास था । वह कोई छोटा - मोटा व्यापार करके जीवन यापन करती थी । टोकरियाँ बुनकर बेचा करती थी । वह शिव की भक्तिन थी । एक बार नदी में अचानक बाढ आयी । नदी ने ताण्डव नृत्य किया। उसकी भीकर लहरों ने तट पर स्थित समस्त जड़ व चेतनों को निगल लिया। तट पर रखी गयी 'वंदी' की सारी टोकरियाँ आदि जल में बह गयी। उसने भगवान का नाम लिया और उनकी शरण ली । शिवजी ने उसकी प्रार्थना सुनी । वह तत्काल एक श्रमिक (मज़दूर) बना । वंदी की झोंपड़ी के चारों ओर मिट्टी से दीवार सा बनाकर पानी को रोक दिया । वंदी ने उसे कोई साधारण मनुष्य समझा उसने 'शिव' 'शिव' कहा । तब उस मजदूर ने कहा - माँ जी! मेरा नाम है शिवैया ।'

'स्वामी! यह क्या है? यह सारा तट सोने की तरह चमक रहा है। इसका कारण क्या हो सकता है?'

'हाँ... तुमने ठीक ही कहा । बिना शिवजी की आज्ञा के चींटी तक हिल नहीं सकती । यदि शिवजी चाहते तो सारा का सारा सोना बन जाता । केवल इतना ही नहीं... यदि हमारा संकल्प उत्तम हो तो ईश्वर भी साथ देता है । कहा जाता है कि इस नदी के निकट पोन्नम्माल नामक एक वृद्ध महिला रहती थी । तमिल में 'पोन' से मतलब है 'सोना'। पोन्नम्माल का अर्थ सोने की मूर्ति है । वह इस नदी के तट पर स्थित शिवलिंग को सोने का कवच समर्पित करना चाहती थी । भले ही उसके नाम में स्वर्ण (सोना) हो, उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। इसीलिये उसने हाथ जोड़ते हुए कहा कि तुम्ही मेरी इच्छा सफल होने का मार्ग दिखाओ । उसने आगे यह भी प्रार्थना की कि - 'हे स्वामी! संकल्प

मेरा है, परन्तु सेवा तुम्हारी है ।' बस... और क्या था, नदी का सारा तट, स्वर्ण कणों के रुप में परिवर्तित हो गया । केवल इतना ही नहीं... घर के सारे बरतन सोने के बन गये । उसने उस स्वर्ण से कवच बनवाया । जब वह कवच बन रहा था तब जो भी चूर्ण बनाते समय झड़ गया था वही यहाँ स्वर्ण - कणों के रूप में दिखायी दे रहा है । स्वामी केवल प्राणदाता ही नहीं है बल्कि सम्पत्ति प्रदायक भी है । 'विभूति' का क्या अर्थ समझते हो? 'विभूति' से तात्पर्य है - विशिष्ट भूति यानी 'ऐश्वर्य' । मार्कण्डेय को शंकर भगवान ने ही 'मृत्युंजय' बनाया था। वही बेञ्जमहादेवी का पुत्र भी बना था। सिरियाल के पिताश्री 'चिरुतोण्डनम्बी' को उसी ने बचाया था । और तो और 'क्षीर सागर मंथन' के समय जो विष प्रकट हुआ उस का शंकर ने ही पान किया तथा 'नीलकण्ठ' की उपाधि प्राप्त की थी । कहा जाता है कि एक औरत ने अपने पुत्र को इसलिये खरी खोटी सुनाया था क्योंकि उसने एक शैव महिला से विवाह किया था । बहू की निस्संतानता का कारण उसने विवाह ही ठहराया । बेचारा, उसका पुत्र मन ही मन कुढ़ - कुढ़कर रोता था । पति पर अनुराग के कारण वह शैव - महिला कुछ भी न बोल पाती थी । कहते हैं कि अंत में स्वयं शिवैया ही उस घर में 'पुत्र की तरह' बच्चे की तरह बदल गया ।'

'ओह!, बढ़िया, बढ़िया बहुत बढ़िया... इसका मतलब... बाल गंगाधर आ गया ।' रंगैया खुशी से उछल पड़ा । सभी मिलकर चल रहे थे । जरा दूरी पर एक मंदिर के पास एक धर्मशाला दिखायी पड़ी । वहाँ एक शिव मंदिर था जिसमें कुछ मूर्तियाँ थीं । एक मूर्ति ऐसी बनायी गयी कि मानो एक शेर एक शिशु की रक्षा कर रहा हो । सभी लोगों ने वहीं विश्राम किया था ।

थोड़ी देर बाद उन लोगों ने सन्यासी से उस मंदिर की स्थल विशेषता के बारे में पूछा । रंगैया व रामैया तो सविनयपूर्वक उस सन्यासी से बार बार पूछने लगे ।

सन्यासी ने मंदिर के बारे में यों बताया - 'प्राचीनकाल में एक व्यापारी था । वह सुपारी का व्यापार करता था । उसका विवाह हो गया, परन्तु उसकी कोई संतान नहीं थी । व्यापारी दम्पति ने भगवान शंकर से मनौती माँगते हुए सोचा कि यदि उनको बेटा हो जाये तो वे अपने बेटे का नाम भगवान शिव का ही रखेंगे और शिवाजी के लिए मंदिर का निर्माण भी करायेंगे ।' शिवजी ने उन पर दया की । फलतः उनके घर में एक पुत्र का जन्म हुआ । उसका नाम 'शिवैया' रखा गया । परन्तु वे मंदिर बनवाना भूल गये ।

कुछ दिनों के बाद उस परिवार को पड़ोस वाले गाँव में जाना पड़ा । माँ शिशु को कंधे पर बिठाकर पति के साथ चल पड़ी । रास्ते में उनको एक जंगल से गुजरना पडा । जब वे दोनों जा रहे थे, उनकी थकावट बढ़ गई । उन्होंने देखा कि पास में एक तालाब था जो एक छोटा कुँआ जैसा था । वे वहाँ थोड़ी देर रुके । शिशु को, वहीं एक बड़े पत्थर पर वस्त्र बिछाकर लिटा दिया । अपने साथ ले आये भोजन को खाने लगे । तभी सहसा 'एक बाघ' कहीं से आ टपका ।

सुपारी दम्पति बाघ को देखकर बहुत डर गये और नौ दो ग्यारह हो गये । वे अपने शिशु को भूल गये । थोड़ी देर बाद उन्हें शिशु की याद आयी । वे घबरा गये । उन्हें यह आशंका हुई कहीं उस बाघ ने शिशु को खा तो नहीं लिया? दोनों दौड़ते - दौड़ते वापस तालाब के पास आये । उन्होंने बड़े विस्मय से देखा कि शिशु हाथ - पाँव हिलाते हुए मुस्करा रहा था । बाघ वहीं लेटकर शिशु की रखवाली कर रहा था ।

सुपारीवाले को सहसा अपनी मनौती याद आयी । फिर दोनों उठ खड़े हो गये । ईश्वर को सम्बोधित करते हुए वे बोले -

'हे स्वामी! हम पापी हैं । इसलिए हम मनौती की बात भूल ही गये । कृपया हमारे मुन्ने को छोड़ दे स्वामी! हम अवश्य यहाँ तुम्हारे लिये मंदिर बनवायेंगे ।' उन्होंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की ।

''तब वहाँ एक विचित्र घटना घटी । वह दृश्य देखकर दोनों विस्मित रह गये । बाघ ने उस दम्पति को देखा, उठ खड़ा हुआ, शिशु को छोड़कर धीरे - धीरे लौट पड़ा । बस यही यहाँ की कथा है ।'' सन्यासी ने कथा समाप्त की । तिरुप्पंगूर मंदिर का गोपुर दूर से दिखायी दे रहा था । तब स्वामी ने अपने साथ आये हुए लोगों को देखकर कहा- ''मैं केवल पथप्रदर्शक हूँ । आप इस ओर जाइये । नंदनार! तुम्हारे भीतर कोई अद्भुत और अनुपम शक्ति चमक रही है । कोई दैव कार्य तुमसे स्थापित होगा । अब मैं अपना रास्ता नापूँगा'' ऐसा कहकर वह अभयहस्त दिखाते हुए अंतर्धान हुआ ।

''अरे भैया! यह कोई साधारण केसरिया वस्त्र पहननेवाला स्वामी नहीं, ऐसा लगता है मानो स्वयं ईश्वर ही हमारे लिये इस भेष में आया हो ।''

नंदनार ने उस ओर मुड़कर दण्डवत् प्रणाम किया जिस ओर स्वामी अंतर्धान हुआ । तत्पश्चात् अपने मित्रों के साथ मिलकर तिरुप्पंगूरु की ओर चल पड़ा । तिरुप्पंगूर की सीमा पहुँचते ही दूर से गोपुर दिखायी पड़ा । वह गोपुर नंदनार के मित्रों को एक स्वप्न-सा दिखायी पड़ा । उन्हें ऐसा भी लगा कि 'वह' गोपुर हाथ फैलाते हुए उन्हें अपने निकट बुला रहा हो । उनके नेत्र आनंदाश्रुओं से भर गये । उन्होंने समझा कि उनका जन्म कृतार्थ हो गया । निकटवाली नदी में डुबकियाँ लगाकर बड़ी

उत्सुकता से मंदिर की ओर लंबी लंबी डग भरते हुए निकल पड़े । मंदिर में से 'पंचाक्षरी' (ॐ नमः शिवाय) मंत्र को सुनकर मुग्ध हो गये । उन्हें असीम आनंद प्राप्त हुआ । श्रद्धालू भक्तगण ''शिव शिव महादेव शंभो शंकर'' कहते हुए आगे बढ़ रहे थे तो नंदनार एवं उसके मित्र 'ओम नमच्चि (शिश) वाय, ओइम नमच्चि (शिश) वाय' का जप करते हुए मंदिर का प्रधान द्वार पार कर गये । धीरे - धीरे चलते हुए ध्वज - स्तम्भ तक पहुँचे ।

नंदीश्वर का हट जाना

बस, सब के सब वहीं रुक गये । वे आगे एक कदम भी बढ़ा नहीं सके । मंदिर के भीतर जानेवाले नंदनार एवं उनके मित्रों को मंदिर के पंड़े - पूजारी, अन्य कर्मचारी एवं मंदिर के भीतर प्रवेश करनेवाले भक्तगण एकटक देखने लगे । उनकी दृष्टि में था, थी, यह भावना भी उनके नेत्रों में झलक रही थी कि ''इसने यहाँ इतना साहस किया? क्या यहाँ आने मात्र से हमारी बराबरी करेंगे?'' नंदनार ने सब कुछ भाँप लिया, मित्रों को रोक दिया । निम्न कुलवालों (अन्त्यजों) को उस जमाने में केवल ध्वज - स्तम्भ तक ही जाने की अनुमति थी । नंदनार रुक गया। शिवदर्शन नहीं हुआ और बीच में नंदी था । बड़ी आशा व उत्सुकता से आये मित्रों के मन में निराशा उत्पन्न हुई । वे हतोत्साही हुए । मन में अशांति थी । नंदनार ने अपने लोगों को देखा । उसने शिवालय के गर्भ - गृह की ओर दृष्टिपात किया । उस समय उनके स्मृति पटल पर सन्यासी और उनके द्वारा बतायी गयी कथायें अंकित हो गये । उनका स्मरण आते ही नंदनार ने सोचा कि यदि भगवान शिव सचमुच भक्तवत्सल हो तो उन्हें दर्शन अवश्य मिलेगा ।

'हे भगवान शिव! हम ध्वज स्तम्भ तक आये । इस जन्म में बस, हमारे भाग्य में इतना ही लिखा हुआ है । वैसे हमने क्या पाप किया है?

ईश्वर की अर्चना, आराधना के समय बजाये जानेवाले विविध वाद्यों की क्या हम वस्तु सामग्री की आपूर्ति नहीं कर रहे हैं? क्या हम गायकों की वीणा इत्यादि वाद्यों के तार नहीं बदल रहे हैं? शोभायात्रा में क्या हम भाग नहीं ले रहे हैं? ईश्वर को समर्पित ज़मीन में क्या हम पसीना बहाते हुए नैवेद्य चढ़ाने हेतु फसल नहीं उगा रहे हैं? तुम्हारा दर्शन इस नंदी के कारण हमें संभव नहीं हो पा रहा है जो हम दोनों के बीच है ।' नंदनार ऐसा सोचते हुए बहुत दुःखी हो गया । नंदनार के मित्र ने कहा - ''स्वामी! क्या आप हमसे नाराज़ हैं ? क्या हमने कोई अपराध किया? आदि देव का दर्शन करने हम आदनूर से आये, हमने आपसे न तो कोई अधिकार माँगा और न ही सम्पत्ति । हम केवल विपत्तियों में ही आपका नाम लेनेवाले नहीं हैं । हम तुम्हें कोई भेंट भी न चढ़ा सकते । तुमसे हम बड़े - बड़े वर माँगनेवाले थोड़े ही हैं । आपसे, हमने बस... एक ही वर... वह भी तुम्हारा दर्शन ही माँगा है ।'' नंदनार के मित्र आगे बोल न सके । नंदनार ने अपने मित्रों की बातें, प्रार्थना व दृढ़ दीक्षा को जान लिया ।

'बिना तुम्हारे दर्शन किये हम वापस नहीं जायेंगे । तुम्हारे दिव्य दर्शन से या तो हम तर जाएँगे या यहीं ढ़ेर हो जायेंगे । यही हमारा निर्णय है । हे भक्तवत्सल! हम पर दया करो', नंदनार आगे बोल न सका । वह मौन हो गया । उसने अपनी आँखें बंद कर ली ।

'अरे भैया! बिना दर्शन किये गाँव जायेंगे तो बस्तीवालों से हम क्या कहेंगे? वैसे तो हमारा मालिक गुस्सैल आदमी है । बात - बात में हमारा अपमान करता है, मज़ाक भी करता है । अब क्या किया जाय!' नंदनार के मित्र दुःखी हो गये ।

बस... केवल प्रार्थना ही हमको उभारेगी । उसको छोड़कर कोई हमें बचा नहीं पायेगा,

परम पुनीत मंत्र है पंचाक्षरी - शिव पंचाक्षरी
कर देता भस्म पापों का, पंचाक्षरी - शिव पंचाक्षरी
रक्षा करता भक्तों की पंचाक्षरी - शिव पंचाक्षरी
तोड़ देता सारे भव बंधन पंचाक्षरी - शिव पंचाक्षरी
पंचम वर्ग का हितकारी है पंचाक्षरी - शिव पंचाक्षरी

नंदनार और उसके मित्रों ने बड़े भक्तिभाव से यह गीत गाया । तभी मंदिर में एक बड़ी विस्मयकारी घटना घटित हुई । श्रद्धालू विस्मित होकर फटी - फटी आँखों से देखते रहे । ईश्वर वाहन नंदी की मूर्ति जो पत्थर की बनी थी, शिव व भक्तों के बीच थी, वह अपने आप हट गयी । श्रद्धालू आपस में विविध प्रकार से चर्चा - परिचर्चा करने लगे । तब जाकर नंदनार व उसके मित्रों को शिवजी का दर्शन हुआ । वे पुलकित व रोमांचित हो गये, उनके नेत्र अश्रुसिक्त हो गये । उन्होंने अपना जीवन मानो कृतार्थ मान लिया । नंदनार ने मंदिर के परिसर में एक छोटा गड्ढा देखा । वह चकित हो गया । उसने राहगीरों से उसके बारे में पूछा । राहगीर यों बोले -

'लगता है आप इस गाँव के लिये नये हैं । यहाँ एक बड़ा सरोवर था । भक्तगण इसमें पवित्र स्नान करते थे । वह सब बीते जमाने की कहानी है । कालक्रम में सीढ़ियाँ ढ़ीली - हो गयीं और टूट गयी । सरोवर की मिट्टी की दीवारें ढ़ह गयीं, गल भी गयीं । किसी की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी । वह उपेक्षित रह गयीं । हमारे बाबा ने उनके दादा - परदादा के जमाने से आनेवाली इस तीर्थ की अनेक महिमायें बतायीं । लेकिन हम क्या करें? सब ईश्वर की इच्छा है । हम उसके हाथ के कठपुतले हैं । बस'... वह भक्त आहें भरता चल पड़ा ।

'क्या हम इसे खोद नहीं सकते? इसकी मरम्मत नहीं कर सकते? सब्बल और चपटी से ही हमारा सारा दिन गुजरता है । शंकर भगवान ने हमें दर्शन तो दिया न! बस, वही हमारे लिए पर्याप्त है । इसके लिए हम कृतज्ञ तो हैं ही । हम अपनी कृतज्ञता इस गड्ढ़े को चौड़ा बनाकर व्यक्त करेंगे । तो चलिये... हम सब मिलकर तालाब बनायेंगे । नंदा! इस मामले में तेरी क्या राय है?' वीरैया ने प्रश्न किया ।

जब एकता सुदृढ़ हो,

तब असंभव क्या होगा?

क्या गंगाधर को जल का अभाव होगा?

परिश्रमी के लिए कोई कार्य - कठिन होता है क्या?

कैलाशपति शंकर भगवान अपनी पत्नी पार्वती सहित यह सारा दृश्य अवलोकित कर रहे थे । अपने भोले और नादान भक्तों का व्यवहार देखकर वे पुलकित हुए । उन अछूतों - पंचमों की भक्ति को एवं पवित्र कार्य को उन्होंने मन खोलकर प्रशंसा की फिर भी माता पार्वती भयभीत हो गयी । वे कहने लगी 'हे नाथ! इन अबोध शिशुओं का दुस्साहस देखिये । जाने क्यों इन्होंने सब्बलें पकड़कर असंभव कार्य करने का निर्णय लिया । इतना गहरा सरोवर खोदना संभव है क्या ? यदि दुर्भाग्य से कोई उस गड्ढ़े में गिरेगा तो क्या वह सुरक्षित रह पायेगा? क्या यह काम इन चार - पाँच लोगों से हो पायेगा?' 'पार्वती! बालशक्ति, आंदोलन से भी बलवती होती है । बच्चों का संकल्प हिमालय से भी सुदृढ़ होता है । तुम्हें उस प्रकार का भय नहीं रखना चाहिये । हमारा सारा प्रमथगण भक्तों के भेष में सहयोग देंगे' शिवजी ने कहा ।

बस... और क्या था? तिरुप्पंगूर मंदिर के पास बड़ा हलचल हुआ। जाने कहाँ से आये, श्रद्धालू भक्त बडी संख्या में आये । नंदनार को देखा । उन्होंने सोचा इस क्षेत्र में सब्बल पकड़ना एक सम्प्रदाय होता होगा। गाँववालों ने सब्बल व चपटी लाकर दिये । सभी ने मिलकर सरोवर का काम शुरु किया ।

सारा काम एक ही दिन में समाप्त हो गया ।

सरोवर (तालाब) तैयार हो गया ।

इतने में सारे भक्तगण अंधेरे में गायब हो गये ।

गाँववाले प्रसन्नता से यह कहते हुए आगे बढ़े कि इस वर्ष को 'प्लवनोत्सव' इसी सरोवर में होगी ।

नंदनार से वीरैया ने कहा - ''नंदनार! चलो गाँव चलें । अगर हम अब नहीं निकलें तो कल तक आदनूर पहुँच नहीं पायेंगे ।'' 'हाँ, तुमने सही कहा । रास्ता तो हमें पता है न । चलिये, चलिये ।' 'मालिक के गरजने से पहले ही हमें अपना गाँव पहुँचना होगा ।' सब गाँव की ओर तेज़ी से रास्ता मोलने लगे ।

नंदनार को चिदंबरम् यात्रा की चिंता

'आदनूर' में खलिहान के पास खड़े पटवारी - (खलिहानों का मालिक) और मोरैया वार्तालाप करते हुए चल रहे थे ।

'अरे मोरैया! मैं एक महीने भर के लिए गाँव से बाहर था न! क्या समाचार है, क्या कोई नयी घटना घटी है गाँव में?' 'नहीं सरकार! कोई नयी बात नहीं है । सब जैसे के तैसे ही हैं?'

'अरे हाँ! तिरुप्पंगूर जो गये, वे वापस आ गये क्या? वह कालू कैसा है?'

'हाँ सरकार आये । लेकिन... वह नंदनार है न सरकार - उसका व्यवहार कुछ अजीब सा लग रहा है । हम समझ नहीं पा रहे हैं कि वह ऐसा क्यों कर रहा है ।'

'क्यों? क्या हुआ?'

'परसों हमारे गाँव के मंदिर में काली माँ - की पूजा के समय मुर्गों की बलि चढ़ा रहे थे, उनका नैवेद्य चढ़ा रहे थे तो नंदनार ने उसे रोक दिया ।'

'अरे! उसकी ये हिम्मत? यह पुराने जमाने से आनेवाला वह गाँव का सम्प्रदाय है न?'

'गाँववालों के बहुत समझाने पर भी उसके कान पर जू तक नहीं रेंगे । वह उनकी बातों पर बिलकुल ध्यान नहीं देता ।'

'फिर क्या हुआ?'

'सभी ने उसको एक पेड़ से बाँधकर फिर यथावत् चलाया ।'

'हाँ, चलो, अच्छा हुआ, तुमने अच्छी बात सुनायी । मोरैया, बता आगे क्या हुआ?'

'वो कालिया ऐसा झूल रहा था मानो उस पर कोई भूत सवार हुआ हो और कह रहा था कि मैं चिदंबरम् जाऊँगा ।'

'अरे... क्या वह चला गया? अगर चला जायेगा तो खेत में काम कौन करेगा?' ''मोरैया! एक सच्ची बात कहूँ? नंदनार जैसा भी हो, वह जी तोड़कर काम करता है । कभी काम से जी नहीं चुराता । चलो, फिर बाद में क्या हुआ?'

'मैं ने ही उससे कहा था - सरकार से बोलकर जा ।'

'चलो, अच्छा किया । फिर क्या हुआ?'

वह कहता रहा - 'मैं कल जाऊँगा, कल जाऊँगा ।' वह अपने मित्रों से भी यही कहता रहा । फिर सभी लोग उससे मज़ाक करने लगे - 'कल जाऊँगा... कल जाऊँगा ।' 'इससे उसने अपना मुँह छोटा कर लिया, बुरा भी मान गया ।'

'अरे मोरैया! तुम्हारी बातों से लगता है कि वह जरुर जायेगा । तुमको किसी भी हालत में उसे रोकना होगा । यह तुम्हारी जिम्मेदारी है ।'

'लो... नंदनार ही स्वयं हमारी ओर आ रहा है । देखिये, बातों - बातों में ही वह आ गया ।'

'शिव, शिव' कहते हुए नंदनार आ रहा था । मालिक को देखते ही उसने बड़ी विनम्रता से झुककर प्रणाम किया ।

'रहने दे... रहने दे ये प्रणाम वणाम । बोल... क्या बात है?' मालिक गरज पड़ा ।

''सरकार! 'चिदंबरम्' में आर्द्रा नक्षत्र के उत्सव मनाये जा रहे हैं । इस बार मैं जाकर दर्शन करना चाहता हूँ ।'' डरते डरते नंदनार ने कहा ।

'क्या कहा? चिदंबरम्? अरे मूरख! क्या तूने उसे आदनूर या तिरुप्पंगूर समझ रखा है?'

''पंचभूतों के शिवक्षेत्रों में चिदंबरम् आकाश क्षेत्र है । वह नटराज क्षेत्र है । यही पर तिल्लै गोविंदराज स्वामी प्रत्यक्ष हुए । इसीलिये इसे वैष्णव क्षेत्र भी कहते हैं ।''

'तेरी ये हिम्मत! मुझे ही तू क्षेत्र की कथा सुना रहा है। सुनो... मैं कह देता हूँ। तू वहाँ न जाएगा। तुझे हम जाने नहीं देंगे। यदि मैं तुझे जाने दूँगा, तो गाँववाले मेरा बहिष्कार करेंगे। अरे मोरैया! तू इसे बता दे।'

'हाँ, हाँ। चिदंबरम् में तीन हजार ब्राह्मण हैं जो हमेशा वेद मंत्रों से यज्ञ करते रहते हैं। उन मन्त्रों को तुझे नहीं सुनना है। तेरे लिए वह सब मना है। यज्ञ - स्थल में तुझे नहीं जाना है, समझे! बड़ा पाप लगेगा।' मोरैया मालिक के कथन का मानो समर्थन करते हुए कहा।

'अरे... और तो और... पंचलिंगों में चिदंबरम् 'आकाश लिंग' है न। वहाँ क्या रक्खा है? केवल 'आकाश' ही है। आकाश को यहीं से देख सकते हो न?' मालिक ने चिढ़चिढ़ाते हुए कहा।

''सरकार ने सच ही बताया। लेकिन मैं तो उत्सव देखना चाहता हूँ।''

''ऐसा क्या? फिर मिर्च के खेत की रखवाली कौन करेगा? उसकी देखभाल कौन करेगा? तेरा बाप?'' सरकार ने आँखें लाल - लाल करके पूछा।

'अरे मूरख! तुझे वहाँ भोजन कौन देगा? भूखों वहीं मर जाओगे।' मोरैया ने डराया।

'तुझे मंदिर में जाने नहीं देंगे। तेरी जात के लोगों को मंदिर प्रवेश मना है न। यह नियम तेरे दादा - परदादा के जमाने से चला आ रहा है। क्या तू इसे नहीं मानेगा? ऐसा करोगे तो तू अंधा हो जाएगा।'

मालिक ने सोचा कि इन बातों को सुनकर नंदनार रुक जाएगा।

'महाराज! कृपया केवल एक सप्ताह का समय दें। मैं हो आऊँगा।'

'अरे मोरैया! क्या यह सचमुच लौटकर आएगा? पहले ही यह शिव के पीछे पागल हो गया। फिर तिरुप्पंगूर जाने के बाद पागलपन दुगना हो गया। बोल! हम क्या करें?'

मालिक ने ऐसा बुदबुदाया कि नंदनार उसे सुन न पाए।

''सरकार! उस समय तो यह अपने मित्रों के साथ गया। अब हम इसे अकेला भेज देंगे।'' मोरैया ने सुझाव दिया।

''वाह! वाह! आजकल तेरा दिमाग बहुत तेज काम कर रहा है रे। मुझसे आगे निकल रहे हो?''

''अरे नंदनार! एक काम कर। तू इतना अनुरोध कर रहा है, न, इसलिये तुझे तीन दिन की अनुमति दे रहा हूँ।''मालिक ने नंदनार से कहा।

''सरकार! आप दया के समुन्दर हैं।'' ''लेकिन, एक शर्त है।'' मोरैया हँसते हुए कहा - 'तुझे सरकार का खेत जोतकर, फसल काटकर, उसका ढ़ेर लगाकर, तीन दिनों में उसे घर पहुँचाना भी होगा, बस।''

'अरे! क्या सोच रहा है तू? तू तो बड़ा शिवभक्त है न। तेरे लिये क्या कोई कार्य असंभव रहेगा? यदि तेरी भक्ति सच्ची है तो हमारी इच्छा भी पूरी हो जाएगी और तेरी चिदंबरम् यात्रा भी सफल होगी।' व्यंग्य के बाण बरसाते हुए मोरैया ने कहा।

'सरकार! आप मेरा भला - बुरा कह सकते हैं। लेकिन कृपया मेरी शिवभक्ति की अवहेलना न करें। मेरा रक्षक तो वह परमशिव ही है। आप तो अपना वचन निभायेंगे न!' नंदनार ने पूछा। 'अरे! ये क्या कह रहा है तू? हमारा मालिक कभी झूठ नहीं बोलता। प्राण जाय पर वचन न जाय - हाँ। इसके लिए तू मुझपर भरोसा रख। सरकार जैसा कहता

है, वैसा कर, हाँ ।' मोरैया के स्वर में व्यंग्य था और यह निश्चित विचार भी कि नंदनार यह काम बिलकुल न कर पायेगा ।

''ठीक है सरकार! मैं खेत पर जाऊँगा ।'' नंदनार आगे बढ़ा ।

नंदनार ने सारे खेत को सरसरी नज़र से देखा, फिर वह सोचने लगा -

'इसमें हल कैसे चलाऊँ ? बावड़ी कहाँ हैं? नाले हैं कहाँ? अगर मिट्टी गीली न हो तो खेत को कैसे जोतना है? चलो खेत जोत लिया, फिर क्या बोऊँ? कैसे बोऊँ? वो कब उगेगा? कब बढ़ेगा? क्या, तब तक मैं ठहरुँ? चलो, यह भी कर लिया । लेकिन फसल काटूँ कैसे? क्या मजदूर आएँगे? काम करेंगे? फसल को अलग अलग लपेटकर क्या वे पत्थर पर डालेंगे? फिर थोड़ा सूखने के बाद प्रत्येक ढ़ेर को पत्थर पर पीटेंगे? धान को तो गिरना है न? फिर गिरे - झरे धान के ढ़ेरों को झाड़ना और धान को अलग करना है? बाद में धान को बोरियों में डालकर मालिक के घर पहुँचाना तो है?' ऐसा सोचते - सोचते नंदनार बेहोश हो गया । गिरते समय उसके होठों पर 'शिव' का पवित्र नाम था । बस... वह तंद्रा में लीन हो गया ।

खेतों में कैलाशनाथ

कैलाश में माता पार्वती और भगवान शंकर विराजमान थे । माता पार्वती सहसा चौंक पड़ी । 'हे भक्तवत्सल? यह कैसी परीक्षा ले रहे हो?' 'क्या बात है? देवी! तुम नंदनार के बारे में सोचकर चिंता कर रही हो?' शिवाजी ने प्रश्न किया । 'आपका निरन्तर स्मरण करनेवाले की क्या यह स्थिति है? मंदिर की सेवा में भाग लेनेवाले की आप इतनी बड़ी भयंकर परीक्षा कर रहे हैं?' पार्वतीजी ने कहा ।

''*नगजा! शंका मत करो । मैं अपने भक्तों के विश्वासों की सदा रक्षा करुँगा । उनकी आस्था कभी निष्फल न होगी ।'' शंकर भगवान बोले ।

''स्वामी! क्या यह **मार्कण्डेय की प्राण - रक्षा जैसी है? अथवा ***भक्त सिरियाल को बचाना जैसा है अथवा ****भक्त तिन्न (कन्नप्पा) को नेत्र देने जैसा है?''

''ऐसा ही समझो, हिमगिरि पुत्री! मनुष्य में उद्यम व साहस विद्यमान हो तो वह कुछ भी प्राप्त कर सकता है । नंद में दोनों हैं । क्या तुम उसके एकाकी होने पर चिंतित हो? हम जो हैं न? हम तो भक्तों के दास हैं ।'' ''हे स्वमी! नंदनार होश में नहीं है । फिर, क्यों न हम उसके मालिक की इच्छा की पूर्ति करें?'' माता पार्वती ने प्रश्न किया ।

''ठीक है । वैसा ही करेंगे ।'' परम शिव ने सिर हिलाया ।

समस्त कैलाश मानो आदनूर चला जा रहा था । 'तुम चिंता मत करो । सब ठीक हो जाएगा ।' परमशिव ने कहा ।

बस, और क्या था? कैलाश शून्य हो गया ।

आदनूर में जहाँ भी देखो, खेतों में मज़दूर ही मज़दूर थे ।

---

* नगजा : पर्वतराज हिमालय की पुत्री है पार्वती । इसलिए 'नगजा' - पर्वतपुत्री कहा गया है ।

** मार्कण्डेय : शिवजी का परमभक्त था । मृत्यु देवता यमराज भी बालक मार्कण्डेय को कुछ नहीं कर सका ।

*** भक्त सिरियाल

**** भक्त तिन्न (कन्नप्पा)

परमशिव ने जहाँ भक्त सिरियाल के प्राणों की रक्षा की थी वहाँ भक्त तिन्न (कन्नप्पा) की भक्ति की परीक्षा करके उसे नेत्र - ज्योति प्रदान की थी ।

भोला शंकर हल जोतने लगा तो माता पार्वती जल की आपूर्ति करने लगी । गणेश ने बीज बोये । कार्तिकेय ने झाड़ - झंखाड़ हटा दिये । समस्त प्रमथगण ने उगी हुई फसल काटी । उसे ढ़ेरों में बाँध दिया गया। आठों दिक्पालकों ने एक - एक कार्य संभाल लिया । बालियों से धान अलग कर दिया गया । नंदीश्वर ने गठरियाँ - बाँधकर उन गठरियों पर अपनी मोहर डाल दी ।

सूर्य उगनेवाला था ।

नंदनार एकदम चौंक पड़ा और जाग उठा ।

सामने एक कृषक खड़ा था ।

उसने कहा - ''नंदनार उठो । चलो, धान की उन बोरियों को अपने मालिक के घर पहुँचाओ ।'' ऐसा कहकर वह अंतर्धान हुआ । नंदनार एकदम विस्मित रह गया । उसे बस इतना ही याद था कि वह थका - माँदा जमीन पर गिरकर बेहोश हो गया था । तो इसका मतलब कैलाशनाथ शिवजी ने उस पर कृपा दृष्टि करने, दया करके, वह स्वयं धरती पर उतर आया ।

'हे स्वामी! भक्तवत्सल यदि कोई हो तो बस, तुम ही हो ।' अरे, मोरैया इसी ओर आ रहा है ।

''मोरैया यहाँ देखो, धान की बोरियाँ। ले चलो । अब मैं 'सिदम्बरम्' जाऊँगा । अब मुझे कोई रोक नहीं सकता।'' नंदनार बोला ।

''हाँ, सच ही कहा उसने । नंदनार कोई साधारण भक्त नहीं । उसमें देवता का अंश है । यदि कोई इसे हानि पहुँचायेगा, तो वह अंधा हो जाएगा । सारा खानदान धूल में मिल जाएगी । मैं अभी जाकर सरकार से बता दूँगा ।'' ऐसा सोचकर मोरैया आदनूर की ओर चल पड़ा तो नंदनार बड़े उत्साह से चिदम्बरम् की ओर तेजी से चलने लगा ।

नंदनार का चिदम्बरम् दर्शन

नंदनार चिदम्बरम् की ओर लंबे लंबे डग भरता हुआ चल पड़ा और आखिर अपना गन्तव्य पहुँच ही गया । वहाँ की बहती नदी में उसने डुबकियाँ लगायी, माथे पर भभूत लगाया । चिदम्बरम् गोपुर को दूर से ही प्रणाम किया, फिर मंदिर की ओर बढ़ा । गोपुर तक आते ही वहाँ के प्रहरी ने उसे रोका

'कौन है तू?'

'मैं... मैं हूँ नंदनार ।'

'कहाँ के रहनेवाला है?'

'आदनूर के पास हमारी बस्ती है ।'

'देखने में तू ''पंचम''* लग रहा है?'

'आपकी नज़र में मैं - 'पंचम' भले ही हूँ लेकिन मैं शिवभक्त हूँ । मैं हर दिन तिरुप्पंगूर में भगवान शिव का दर्शन करता था ।'

'वो सब मैं नहीं जानता । तेरा पेशा क्या है रे!' 'मैं भगवान के ही खेत में काम करता रहता हूँ । मंदिर में बजाये जानेवाले - ढ़ोल, आदि वाद्यों पर चमड़ी को कसकर बाँधना मेरा काम है ।'

'इसका मतलब तू मंदिर की सेवा करता है । है न!'

'हाँ हाँ! इसीलिये मुझे अंदर जाने दें ।'

'न... न... तू नहीं जा सकता । तेरी जात के लिए मंदिर में जाना मना है ।'

---

* पंचम - अछूत

'मैं शिव का भक्त हूँ। मुझे मत रोकिये।'

'नहीं... बिलकुल नहीं जाने दूँगा।'

'हे स्वामी! यह क्या परीक्षा है?'

'तू अपवित्र है, अछूत है।'

'न... मैं अभी नदी में पवित्र स्नान करके तो आ रहा हूँ भैया।'

'तेरा जन्म ही अपवित्र है, मलिन है।'

'वैसे, सभी के जन्म भी मलिन हैं न।'

'तेरी बस्ती ही मलिन है।'

''ये देखिये... इस मंदिर के चारों तरफ मलिन नहीं? क्या आपको गंदगी नहीं दिख रही?''

''क्या बकता है तू? मेरे मुँह में मुँह लगा रहा है? तेरी ये हिम्मत? चल हट जा।''

'क्यों हटूँ मैं? कर्म - फल मलिन है, काम - क्रोधादि मलिन हैं। इस तरह की मलिनता, अपवित्रता दूर करने के लिए ही भगवान का दर्शन करना है।'

'हो सकता है। परन्तु तू तो पैदाइश ही अपवित्र हो। आकाश - जल पवित्र है, फूलों से होती हुई बहनेवाली हवा पवित्र है, अग्नि पवित्र है, आत्मा पवित्र है और मानवता पवित्र है।'

तभी मंदिर का अधिकारी पंड़ा - पुजारियों के साथ मिलकर वहाँ आया।

'अरे! तूने अग्नि को पवित्र कहा न! क्या तुझे पता है, माता सीताजी अग्नि में कूदकर अपनी पवित्रता को प्रमाणित किया?'

''तो, अगर मैं भी आग में कूद पड़ूँ तो पवित्र बनूँगा?''

''हाँ हाँ, क्यों नहीं? अग्नि तो पापों का नाश करता है। हर वस्तु को पवित्र बना देता है। यदि तू आग में कूदकर पवित्र बनोगे तो मंदिर में प्रवेश कर पाओगे।''

'महानुभावों! मैं तो अपवित्र हूँ। मलिन हूँ। यदि मैं अग्नि में कूद पड़ूँ तो क्या आग अपवित्र नहीं हो जायेगा?'

''न, कभी नहीं होती। तेरी मलिनता धुएँ के रूप में ऊपर चली जाती। तू अत्यधिक प्रकाशित हो जाएगा?''

''ऐसा क्या? तो ठीक है। मैं आपकी परीक्षा के लिए तैयार हूँ स्वामी!''

तिरुप्पंगूर में नंदी का अपनी जगह से हट जाना, आदनूर में स्वयं भगवान शंकर का कृषक बनकर हल जोतना, धान उपलब्ध कराना... इत्यादि उसके मनोनेत्र के समक्ष प्रत्यक्ष हुए।

''कल ही सुमुहूरत है। मंदिर के दायीं ओर अग्निकुण्ड की व्यवस्था की जाएगी। तू कल प्रातःकाल में ही स्नान करके आ जाओ। पहले अग्नि - प्रवेश, उसके बाद नटराज का दर्शन... ठीक है?'' एक अधिकारी ने कहा।

नंदनार ने बड़े आनंद से सिर हिलाया। मंदिर के अधिकारी बस, आज्ञा देकर चुपचाप चले गये। थोड़ी देर पहले से यह सब दूर से देखने वाले कुछ लोग आकर बोले -

'अरे नंदनार! क्या तू पागल हो गया? आग में कूदोगे तो जलकर राख बन जाओगे। पवित्र होना तो दूर, तेरा नामो निशान मिट जाएगा रे? यह सब मंदिर के अधिकारियों का षडयन्त्र है। जा, चले जा, अपना गाँव चले जा। तूने गोपुर देख लिया न? गोपुर का दर्शन मंदिर के दर्शन के बराबर है।'

'इस तरह अपने प्राण यों ही नहीं गँवाना। अब तो आदनूर मंदिर में शिव की सेवा तो कर रहा है न? इस जन्म के लिए यह पर्याप्त है। चलो, अगले जन्म में तू उच्च कुल में अवश्य पैदा हो जाओगे। तब भगवान का दर्शन कर सकोगे।' किसी ने कहा।

दूसरे व्यक्ति ने कहा - ''क्या? मंदिर के बगल में अग्नि - कुण्ड? न... न...! इस तरह के अग्नि कुण्ड ग्रामों की सीमाओं में हैं न कि चिदम्बरम् में। ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ। इससे मंदिर अपवित्र हो जाएगा न। तू अपवित्रता का कारण मत बनो। तेरा जन्म इससे भी निकृष्ट व निम्न होगा। जा, जा, चले जा यहाँ से।''

''मैं नहीं जाता, मुझे जो अवसर प्राप्त हुआ है, उसे मैं खोना नहीं चाहता। अगर मैं बिना शिव - दर्शन किये आदनूर जाऊँगा तो लोग मेरी खिल्ली उडायेंगे। मुझ पर हँसेंगे। या तो आलय - दर्शन करुँगा या स्वयं की आत्माहुति कर दूँगा। जो भी होगा यहीं आकाशलिंग क्षेत्र में ही होगा।'' नंदनार ने बड़े आत्म विश्वास के साथ कहा। नंदनार जब टस से नस नहीं हुआ और अपनी ही बात पर अड़ा रहा तो नागरिक विवश होकर बोझिल दिलों से अपने - अपने घर चल पड़े।

नंदनार का भगवान शिव में विलीन होना

अगले दिन...। मंदिर के बगल में ही अग्नि - कुण्ड़ बनाया गया। उनमें से ज्वालायें भभक रही थीं मानो वे आकाश को छूना चाहती हों। पुजारी ''अग्नि - सूक्तम्'' का पाठ कर रहे थे। नंदनार ने तीन बार अग्निकुण्ड की परिक्रमा की। तदुपरान्त सभी को प्रणाम करके वह अग्निकुण्ड में कूद पड़ा।

पुजारी अचंभित रह गये। उन्होंने सोचा कि नंदनार अग्निज्वालायें देखकर भयभीत होगा एवं अपना प्रयत्न छोड़ देगा। नागरिकों की आँखों में आँसू फूट पड़े। परन्तु... आश्चर्य... एक चमत्कार हो गया। अग्निज्वालायें बुझ गयीं। वे ही बाद में नंदनार के कंठहार बन गयीं। नंद तो तपे हुए स्वर्ण की तरह चमकता हुआ बाहर निकला।

नंदनार को भगवान नटराज शंकर की कृपा - विशेषता अवगत हुई। पुजारीगण को 'सच्ची भक्ति क्या है', अच्छी तरह स्पष्ट हुई।

पुजारियों ने नंदनार को सादर आमंत्रित किया।

सभी मिलकर मंदिर का प्रधान गोपुर पहुँचे।

'नटराज भगवान का दर्शन अब सरल हो गया, सुलभ साध्य हो गया।' ऐसा सोचकर नंदनार के नेत्र अश्रुसिक्त हो गये। बस... अगले क्षण वह उस भगवान नटराज में विलीन हो गया। 'ज्योति', 'परंज्योति' में समा गयी। सभी श्रद्धालू, पण्ड़े - पुजारी अवाक् रह गये। तभी आकाशवाणी यों बोली -

''नंदनार की शिवभक्ति अद्भुत है, अनुपम है।''

ईश्वर की सृष्टि में ऊँच - नीच का भेदभाव नहीं है। यानी कोई अन्तर नहीं है।

निचले स्थलों की ओर बहते हुए जाने वाली नदी भी पूजनीय है। उसका जल पवित्र है।

जात - पाँत, कुल, लिंग इत्यादि भेदभाव केवल शरीर के लिए है आत्मा के लिए नहीं ।

मंदिर निर्माण में जिस प्रकार सभी की भागीदारी रहती है, उसी प्रकार सामाजिक प्रगति में भी समस्त मनुष्य समान रुप से भागीदार हैं। नंद की जीवनी विस्मयकारी है । यह नूतन व विशिष्ट है ।

* * *

अनुबन्ध

i) चिदम्बर क्षेत्र - स्थल पुराण

इस स्थान का प्राचीन नाम था - 'तिल्लैवनम्'। 'तिल्लैवनम्' नाम के पीछे एक रोचक कथा है । प्राचीनकाल में जिल्ली, दिल्ली नामक दो असुर महिलायें थीं । एक बार वे दोनों मिलकर श्रीमुष्ण क्षेत्र में विराजमान भूवराह स्वामी का दर्शन करने गयीं । भूवराह स्वामी ने इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर कोई वर माँगने को कहा । जिल्ली ने उनकी द्वार पालिका/ द्वार रक्षिका बनने का वर माँगा तो भगवान ने वह वरदान दे दिया। तत्पश्चात् दिल्ली ने सदा उनके ही निकट रहने का वर माँगा तो स्वामी ने उसे श्रीमुष्णम् के ही निकट स्थित पुण्डरीकपुरम् जाने की आज्ञा दी एवं वहाँ पवित्र स्नान करके तपस्या करने को कहा । दिल्ली ने उनकी आज्ञा सिर आँखों पर ले ली । इससे भगवान प्रसन्न होकर गरुड़ पर पधारे । उन्हें गरुड़ासीन देखकर दिल्ली अत्यन्त प्रसन्न हुई और उनसे उसे एक सुंदर वृक्ष बनाने का वर माँगा । उसने यह भी चाहा कि वह सारा स्थल उसी वृक्ष के नाम से पुकारा जाय एवं वह वृक्ष सदा शाखाओं व टहनियों से महकता हुआ रहे । भक्तवत्सल वराह स्वामी ने अपनी सहमति दे दी।

दिल्ली की इच्छा पूरी हो गयी । उसने एक मनोहर, सुगंधभरित हराभरा वृक्ष रुप धारण कर लिया था । 'दिल्ली' शब्द ही कालक्रम में 'तिल्लै' बन गयी । तिल्लै वृक्षों से बना वह स्थल तिल्लैवन बना एवं इसी कारण इस स्थल में विराजमान श्री गोविंदराज स्वामी को 'तिल्लै गोविंदराज' कहते हैं । इसी प्रकार यहाँ के भगवान परमशिव 'तिल्लैनटराज' बना। माता 'काली' भी 'तिल्लै महाकाली' के नाम से विख्यात हुई । चूँकि यहाँ

काली एवं नटराज का विचित्र नृत्य प्रदर्शित हुआ यह स्थल पुण्डरीकपुर ''तिल्लै तिरुच्चित्रकूटम्'' के नाम से अभिहित किया गया ।

चिदम्बर क्षेत्र का दूसरा नाम पुण्डरीकपुर है । पुण्डरीक एक मुनि था । महर्षि नारद उसके गुरु थे । वे विष्णुभक्त थे । पुण्डरीक का लक्ष्य दिव्य तीर्थ स्थानों का भ्रमण करना था । उस यात्रा के दौरान जहाँ भी सरोवर (झील) दिखायी पड़ते वह उसमें उतरकर कमल के फूल चुन लेता और उन्हें लक्ष्मी - नारायण को समर्पित करता रहता । पुण्डरीक शब्द का अर्थ है - 'कमल' (पद्म), सदा 'पुण्डरीक' (कमल फूल) समर्पित करते रहने से इनका नाम 'पुण्डरीक' बन गया ।

एक बार पुण्डरीक भ्रमण करते करते 'श्री मुष्णम्' पहुँच गया । उसने वहाँ विराजमान भगवान भूवराह का दर्शन किया । फिर वहाँ से वह 'तिल्लैवन' (तिरुच्चित्रकूटम्) पहुँच गया । यहीं पर एक सुंदर सरोवर (तालाब) था जिसे लोग 'तिरुप्पार्कडल' कहा करते थे । उस स्थान पर पहुँचते ही उसे आकाशवाणी (अशरीरवाणी) सुनायी पडी कि ''हे पुण्डरीक! तुम 108 कमल के फूलों से मेरी आराधना अर्चना करो ।'' पुण्डरीक पुलकित हो गया एवं 108 कमल पुष्प चुनकर भगवान नारायण की मूर्ति देखने एवं उन्हें फूल समर्पित करने निकल पडा । परन्तु... उन्हें घोर निराशा ने घेर लिया था । उसको कहीं भी 'श्रीमन्नारायण' की शिलामूर्ति दिखाई नहीं दी । उसको ऐसा लगने लगा कि उसके द्वारा संचित 108 कमल के फूल मुरझा जायेंगे । इस चिंता ने महर्षि को बहुत अशक्त बना दिया ।

इतने में भगवान श्रीमन्नारायण चारों भुजाओं सहित शयन - मुद्रा में प्रत्यक्ष हुए । महर्षि पुण्डरीक ने देखा कि सरोवर से उसके द्वारा संचित किये गये 108 कमल श्रीमन्नारायण के 'दिव्य शरीर' पर सजे हुए हैं।

उन्होंने तुरन्त दण्डवत् प्रणाम करके भगवान से उसी स्थल में, उसी रुप में साधारण भक्तों को दर्शन देने की सविनय प्रार्थना की थी । श्रीमन्नारायण ने हामी भर दी । केवल इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने यह भी कहा कि आगे से उस स्थान का नाम ''पुण्डरीकपुरम्'' होगा एवं पद्मों का निलय होनेवाला वह सरोवर ''पुण्डरीक पुष्करिणी'' कहलायेगा । इसी कारण से 'चिदम्बरम्' को 'पुण्डरीकपुरम्' भी कहा जाता है ।

पेरुम्पुत्रपुलियूर

संस्कृत शैली में 'पेरुम्पुत्रपुलियूर' का अर्थ 'व्याघ्रपाद ऋषि' से है। इसका अर्थ है - 'बाघ के पाँव के समान पैरोंवाला'। चिदम्बरम् का निवासी यह ऋषि बहुत बड़ा शिवभक्त था । शिवदर्शन एवं शिव की अनुकम्पा हेतु इसी नगरी में इसी स्थान पर व्याघ्रपाद ने अनेकों वर्ष कठोर तपस्या की थी । इसी कारण से इस प्रान्त का नाम 'पेरुपुत्रपुलियूर' पड़ा ।

ii) चिदम्बरम् 'श्री वैष्णव दिव्य देश' भी है

'नालायिरम्' श्री वैष्णवों का परमपवित्र ग्रंथ है । यह 12 आल्वारों* (आल्वारों) के पाशुरों (पद्यों) का संकलन है । इन बारह आल्वारों द्वारा जिन जिन मंदिरों में भगवान श्रीमन्नारायण की आरती उतारी गयी (मंगलाशासन किया गया था) उन उन प्रदेशों को 'दिव्य देश' कहना एक परिपाटि है । इन दिव्य देशों में 'तिरुच्चित्रकूटम्' एक है । यहाँ के पेरुमाल (भगवान) 'श्री गोविन्दराज' है ।

* ''आळ(ल)वार'' शब्द का प्रयोग उस भक्त के लिए किया जाता है जो सदा - सर्वथा भगवद् भक्ति में तल्लीन रहता एवं भगवान के प्रति तृष्णा से शरणागति करता है ।

शयन - मुद्रा (लेटे रहने) में रहनेवाले अर्चामूर्ति हैं ये भगवान गोविंदराज । देवाधिदेवन् और पार्थसारथी इनके अन्य नाम हैं । उत्सवों में इन्हीं को लेकर शोभायात्रा निकालते हैं । इनके अतिरिक्त 'चित्तिरकूडत्तुल्लान' नामक एक अन्य उत्सवमूर्ति है जिसकी दो पटरानियाँ हैं । मूल माता का नाम है पुण्डरीकवल्ली । तीर्थ (तालाब) है, पुण्डरीक पुष्करिणी, विमान तो सात्विक विमान है । इस भगवान ने तिल्लै के निवासी 3000 विप्रों, कण्व व पतंजलि को दर्शन दिया । यह एक विशेषता ही है कि महान भक्त कुलशेखराळवार ने 2 पाशुरों (पद्यों) एवं तिरुमंगै आळवार ने 32 पाशुरों (पद्यों) से स्तुति करके मंगलाशासन किया था (आरती उतारी थी) । कहा जाता है कि भगवान कृष्ण ने 'गोपालैया' नामक ऋषि को 18 दिन में 18 लीलायें दिखायी थीं । इसी स्थान पर महाराज भक्त अंबरीश ने एकादशी व्रत किया था ।

यह तो सर्वविदित है कि प्रत्येक नदी को हर बारह वर्षों में एक बार 'पुष्कर' आते हैं । इसी प्रकार कावेरी नदी के भी पुष्कर आते हैं । इसे 'महामाघ' कहते हैं । कुंभकोणम् में ये पुष्कर अत्यन्त वैभव के साथ आयोजित किये जाते हैं । मान्यता है कि ऐसी महिमावाली कावेरी इस चिदम्बरम् की पुष्करिणी में पूरा एक दिन रहती है । वह इस पुण्डरीक पुष्करिणी में अन्तर्वाहिनी बनकर रहती है ।

इस गोविन्दराज स्वामी मंदिर की एक अन्य विशेषता भी है । कहा जाता है कि भगवान नटराज अपने सेवक 3000 ब्राह्मणों सहित 'तीर्थवारि' पर्व के दिन गोविंदराज का दर्शन करने पधारे थे । यहाँ के वैष्णव विप्र प्रायः यह कहते हुए पुलकित हो जाते हैं कि सर्वश्रेष्ठ गोविंदराज जी को प्रसन्न रखने हेतु चिदम्बरेश्वर ने नृत्य किया था ।

iii) नंदनार का जीवन संदेश

भक्त नंदनार का जन्म भले ही दलित परिवार में हुआ हो, ये समस्त मानवों के लिए आराध्य थे, आदरणीय थे । इन्होंने 'स्वच्छता' यानी शारीरिक एवं आंतरिक स्वच्छता पर विशेष बल दिया था । इनकी राय में हर प्राचीन या पारंपरिक आचार विचार व रीति - रिवाज़ स्वीकार्य नहीं है । इन्होंने उनका समर्थन भी नहीं किया था । इसी कारण अपनी बस्ती में मूक प्राणियों को बलि देने की प्रथा का खण्ड़न किया था । नंदनार के अनुसार अपनी बिरादरी के सभी लोगों को स्वच्छ, पवित्र, भक्तियुक्त सरल एवं उन्नत विचार चिन्तन करनेवाले होने चाहिये । 'करो पहले कहो पीछे' वाली सूक्ति के अनुसार इन्होंने अपना जीवन भी इसी प्रकार बिताया एवं लोगों को उत्प्रेरित भी किया था ।

भक्त नंदनार भक्ति को मुक्ति प्राप्त करने का परम साधन माननेवाले महात्मा थे । विशेषकर उन्होंने शैवक्षेत्र का दर्शन करने के लिए एवं अपनी आत्मोन्नति हेतु विशेष प्रयास किया था । एक ओर जहाँ निर्मल हृदय से भगवान शिव की आराधना की, दूसरी ओर उन्होंने सामाजिक हित के लिए भी अपने मित्रों के सहयोग से अनेक प्रकार की सेवायें भी की थी ।

नंदनार का संकल्प दृढ़ था । भगवान चिदम्बरेश्वर के मन को जीत लिया था नंदनार ने अपनी शरणागति से, अपनी निष्ठा से एवं अपने अचंचल विश्वास से । वे भक्तिचेतना के एक साकार मूर्ति थे । उनका जीवन पवित्र था एवं धन्य था । नायन्मारों में नंदनार का स्थान अनुपम था । नायन्मार के रत्नहार में वे एक बहुमूल्य मणि थे ।

iv) चिदम्बरम् मंदिर निर्माण की कुछ विशेषतायें

चिदम्बरम् मंदिर मनुष्य के आकृति का प्रतीक है । इसी कारण भगवान बालाजी वेंकटेश के महान भक्त अन्नमैया ने भी ''तन ही मंदिर शिर ही - शिखर''[1] कहकर स्तुति की थी ।

हिन्दू धर्मावलम्बियों का विश्वास है कि ''देह ही मंदिर है, जीव ही देव है ।''[2] इस दृष्टि से चिदम्बरम् मंदिर को रुपांकित किया गया है । चारों ओर उत्तुंग गोपुरों से चालीस एकड़ की परिधि में वेद, शास्त्र, आगम, तत्व आदि का रहस्य द्योतक सा यह मंदिर बना है । इस मंदिर के चार अहाते (प्राकार) हैं । इस मंदिर का हर निर्माण आध्यात्मिकता को प्रतिबिंबित करता है । गोपुर के नौ कलश नौ शक्तियों के प्रतीक हैं । 'कैमरम्' कहे जानेवाले ढ़लानों के चौंसठ भाग चौंसठ कलाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं । गोपुर में स्थित 21,600 श्वपरैल श्वास (उच्छ्वास, निःश्वास) के संकेत हैं । 72,000 जो खपरों को परस्पर जुड़े रहने के लिए लगाये गये हैं वे मनुष्य शरीर की नाड़ियों (नब्जों) के संकेत हैं । 5 खम्भे 5 इन्द्रियों के, ब्रह्मपीठ के 10 खम्भों में से 6 शास्त्रों व 4 वेदों के संकेत करते हैं । इसी प्रकार स्वर्ण दरबार के 18 खम्भे 18 पुराणों के, चारों ओर स्थित 96 खिड़कियाँ 96 तत्वों के सूचक माने जाते हैं ।

इस मंदिर में 'षट्काल' (दिन में छः बार) अर्चना की जाती है ।

v) भगवान नटराज की मूर्ति - कुछ विलक्षणतायें

भगवान नटराज की मूर्ति उन मूर्तियों में से एक है जिन्होंने विदेशियों को अत्यन्त आकर्षित किया । वह नृत्य की एक विलक्षण मुद्रा

1. तनुवे गुडियट, तलये शिखरमट - अन्नमैया
2. देहो देवालय प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः ।

(पोस्चर) में विद्यमान है । वह जगत - चेतना एवं ब्रह्माण्ड शक्ति का संकेत है । नृत्य में तल्लीन स्वामी के पैरों तले 'बेहोष पुरुष' कुचले हुए रहता है । वही पुरुष अज्ञानमूर्ति है ।

भगवान नटराज के हाथ में बजनेवाली 'डमरु' सृजनशक्ति एवं आदिम शब्द का संकेत है । दूसरे हाथ की अग्निशिखा माया - मोह के दहन के लिए, दूसरा हाथ 'अभय' का संकेत, एक और हाथ चरण की ओर संकेत करना विशेष बात है । चारों हाथों का चालन (विन्यास) बड़ा विचित्र है । परन्तु कुछ मूर्तियों के एक हाथ में मृग (हिरन) भी देखा गया है । चंचल एवं तेज़ दौड़नेवाले हिरन को पकड़ना जितना कठिन है, चंचल मन को नियंत्रित करना भी उतना ही कठिन है । हिरन इसी विषय का संकेत है ।

मूर्ति के पीछे वर्तुलाकार में सजाये गये दीप(क), विस्तार में फैली हुई प्रवृत्ति व विज्ञान के संकेत हैं । खुले बाल अबाध गति से बढ़नेवाली चेतनाशक्ति के लिए प्रतीक है । कपाल परमशिव की लय - शक्ति का प्रतीक है । जटाजूट में स्थित गंगा पवित्रता, एवं हरीतिमा का प्रतीक है तो शिरोभाग पर विलसित अर्द्धचन्द्र (आधाचाँद) सौंदर्य और समय का। सिर पर ही स्थित साँप कुण्डलिनी शक्ति का प्रतीक है एवं तीसरा नेत्र ज्ञान का संकेत है । इसी प्रकार दाएँ कान का मकरकुण्डल, बाएँ कान का तटांक (कर्णफूल) अर्द्धनारीश्वर तत्व को सूचित करता है । गले में स्थित कपालों का हार अनंत कोटि प्राणियों एवं उनके विध्वंस का प्रतीक है तो तन पर सुशोभित भभूत पवित्रता व वैराग्य का सूचक है । गले का स्फटिक हार घनीभूत करुणा - कटाक्ष के बिन्दु के प्रतीक हैं । 96 सूत्रों का यज्ञोपवीत (जनेऊ) तात्विक विषयों का सूचक है । शिव के द्वारा धारण किया गया शेर का चमड़ा (वस्त्र) छिले हुए अहंकार का

द्योतक है । प्रदोषकाल का नृत्य माया निर्मूलन, कर्मदाह एवं जीवोद्धरण का संकेत है । निरंतर ज्वलंत रहनेवाला मंच केवल परमशिव का ही है जो तड़पने वाले भक्त के हृदय का द्योतक है । कुछ लोगों की दृष्टि में नटराज भगवान का रुप 'पंचाक्षरी' का संकेत है । नटराज का पाँव 'न' का, नाभि 'म' का, कंधे 'शि' का, मुख 'वा' का एवं सिर 'य' का प्रतीक है ।

यहाँ का स्थल पुराण कहता है कि एक साँप एवं एक बाघ - दोनों परमशिव की अर्चना आराधना करके प्रतिदिन नटराज का तांडवनृत्य देखते रहते हैं । इसी कारण संस्कृत में 'भुजंगाष्टक', एवं 'कवच स्तोत्र' लिखे गये हैं । इनके अतिरिक्त तिल्लैवन माहात्म्यम्, चिदम्बर माहाम्त्यम्, सभानाथ माहात्म्यम्, चिदम्बर रहस्य इत्यादि ग्रंथों ने तमिल में इस मूर्ति का वर्णन किया है ।

चिदम्बरम् नायन्मार

चिदम्बरम् शैवों के लिए मुक्तिस्थल है । शिवभक्त, तिरुवायूर में जन्म, तिरुवन्नामलै में कौमार्य, काञ्चीपुरम में जीवनानुभव तथा काशी अथवा चिदम्बरम् में मृत्यु प्राप्त करना चाहते हैं ।

नायन्मारों में 'माणिक्यवाचकर' नामक महान भक्त को चिदम्बरेश्वर ने ही 'सायुज्य'[1] का वर दिया था । उसे अपने निज रुप से दर्शन भी दिया था । माणिक्यवाचकर ने अपनी ताडपत्र ग्रंथ को हस्ताक्षर सहित - 'स्वामी' चिदम्बरेश्वर को समर्पित किया था । अगले दिन ही वह ग्रंथ किसी भक्त के द्वारा दशों दिशाओं में व्याप्त हो गया । वैष्णवों के लिए 'नालायिरम्' जितना महत्वपूर्ण है, शैवों के लिए 'तेवारम्' उतना ही महत्वपूर्ण है । यह वेदों का समतुल्य है । जब यह ग्रंथ इस क्षेत्र में कहीं

1. सायुज्य - परमेश्वर में विलीन हो जाना

निक्षिप्त था तब 'नम्बियाण्डार नम्बि' नामक भक्त के द्वारा पुनः प्रकाश में आया एवं इसका खूब प्रचार हुआ । ठीक इसी प्रकार तिरुनील कण्ठ नायनार नामक वृद्ध यहीं पर पुनः युवक बना था । उमापति शिवाच्चियार नामक सुविख्यात वेदांत पंडित चिदम्बरम् नटराज की आराधना करके यही पर कृतार्थ हुआ था । उनकी समाधि आज भी चिदम्बरम् रेल्वेस्टेशन के निकट हमें मानो आमंत्रित करता रहता है । इसी प्रकार कहा जाता है कि शेक्किलार नामक महान विद्वान ने अनभय चोल के आदेशानुसार अपनी रचना 'पेरियपुराण' का यहीं पर भगवान के समक्ष गाया था। दलित 'नंदनार' का शिवजी में विलीन होना इस क्षेत्र की महान विशेषता है ।

vi) तमिल शैव सम्प्रदायों में नंदनार का प्रसंग

तमिल शैव सम्प्रदायों में 12 भक्ति स्तोत्र एवं 14 आदेश स्तोत्र सुविख्यात हैं । इनमें से 12 भक्ति स्तोत्रों को 'पन्निरु तिरुमुरै' कहते हैं । इस 12 वाँ तिरुमुरै को पेरियपुरणम् (बड़ा पुराण) कहना परिपाटी है। 'पेरियपुराणम्' का अर्थ है 'बड़ा (महा) पुराण' । इस पुराण के प्रणेता (लेखक) हैं- 'शेक्किलार' ।

बचपन में शेक्किलार को 'अरुळ(ल)देवर' कहते थे । मद्रास (चेन्नई) के निकटवाला स्थान 'कुन्नत्तूर' इनका जन्मस्थान था । ये अभयकुलशेखर चोलराज के मन्त्री थे । शेक्किलार अपनी रचना को 'तिरुत्तोण्डर पुराण' के नाम से अभिहित किया था । तोण्डु से तात्पर्य है सेवा । 'तोण्डर' का अर्थ है भक्त । इस ग्रंथ को भक्तों की गाथाएँ अथवा पुण्य सेवकों की कथाएँ कह सकते हैं ।

साधारणतः पुराण कहते ही लोग समझते हैं कि वह कोई 'बृहत् ग्रन्थ' होता है । परन्तु शेक्किलार ने हर भक्त की जीवनी को संक्षेप में

लिखकर हर एक की कथा (चरित) को 'पुराण' कहा। 'भक्त चरित' के सभी अध्याय छोटे छोटे ही हैं। फिर भी इन्हें पुराण कहना विचित्र विषय है। इसमें तिरसठ (63) भक्तों की जीवन गाथाएँ हैं। सामुदायिक रूप से और नौ (9) भक्तों की गाथाएँ हैं। इस प्रकार इस ग्रन्थ में (72) जीवन गाथाएँ वर्णित हैं जो विविध प्रकार की हैं।

इनमें कुछ संकलित कथाएँ एवं कुछ अपराधमुक्त भक्तों की कथाएँ हैं। ये भक्त तो निरन्तर परमेश्वर में अनुरक्त रहते हैं। सदा परमात्मा के निकट रहनेवाले हैं एवं कुल, जाति, धर्म, वर्ण, वर्ग इत्यादि भेदभावों से परे हैं। इन्हें मूलाधार प्राप्त हैं एवं ऐसे समस्त भेदभावों व संकीर्णताओं से परे हैं 'नंदनार'। शेक्किलार की रचना में नंदनार 18 वाँ भक्त है। समस्त पेरियपुराण 13 अध्यायों में 'तिरुविरत्तुम्' नामक छंद में विरचित है। इसमें कुल मिलाकर 4,236 पद्य हैं।

नंदनार चरित को श्री गोपालकृष्ण भारतीजी ने अद्‌भुत कल्पना, दार्शनिक भावों, नृत्य व संगीत, एकांकी के रुप में बनाया था। वे 19 वीं सदी के महान रचनाकार थे। ये ब्राह्मण थे। फिर भी नंदनार की कथा सुनकर बहुत प्रभावित हुए। 'नंदनार चरित्तिर कीर्त्तनै' नामक ग्रंथ में 134 कीर्तन, 21 विभिन्न छंद एवं 298 गीत हैं। इन गीतों में कुछ तो अत्यन्त लोकप्रिय हैं। जैसे :

1) अय्या ओरु सेइदि केलुम् (महाशय! मेरी एक बात सुनिए)
2) मार्गळि (लि) मादं तिरुवादिरैनाल (धनुर्मास में आर्द्र नक्षत्र दिन)
3) शिवलोग नाथ नैक्कण्डु (शिवलोक नाथ को जी भरके देखकर)
4) सिदम्बरं पोनामल इरुप्पेनो (क्या मैं चिदम्बरम् जाये बिना रह सकूँगा?)

उपर्युक्त गीत एवं कुछ अन्य गीतों ने पंडितों व सामान्य व्यक्तियों को आकर्षित किया था। इनकी एक और विशेषता यह है कि आज भी खेतों - खलिहानों में काम करनेवाले किसान व मजदूर, शहरों नगरों में भिखमंगे - इन गीतों को गाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। इससे इन गीतों की मधुरता स्पष्ट होती है। यहाँ विशेष ध्यान देने की बात यह है कि जिन अन्य देशों में तमिल भाषा प्रचलित है वहाँ भी नंदनार के गीत बड़े प्रेम से गाये जाते हैं। इससे भारत देश की ख्याति में वृद्धि हुई है।

तेलुगु भाषियों ने भी इस कथा का आदर किया था। विशेषतः हरिकथा गायकों ने इस कथा का बहुत प्रचार किया था। आज भी नंदनार चरित की हरिकथाएँ, आंध्र एवं तेलंगाणा में प्रचलित हैं। यहाँ तक कि तेलुगु फिल्म में भी 'नंदनार' से सम्बन्धित गीत आये हैं।

vii) संकीर्तनों में 'चिदम्बरम्'

दीक्षितर (सन् 1776 ई.) की सुविख्यात रचना 'आनंदनटना प्रकाशम्' - राग केदार, मिश्र एकताल में निम्नलिखित रचना में चिदम्बरेश्वर का वर्णन है यह संस्कृत में लिखा गया है :

आनंदनटनप्रकाशं चित्सभेशम्
आश्रयामि शिवकाम वल्लीशम्

भानु कोटि कोटि संकाशम्
भक्ति मुक्ति प्रद दहराकाशम्
दीनजन संरक्षणचणं दिव्य पतंजलि
व्याघ्रपाददर्शित कुञ्चिताब्जचरणम् ॥आनंद॥

शीतांशुगंगाधरं नीलकंधरम्
श्रीकेदारादि क्षेत्राधारम्
भूतेशं शार्दूलचर्माम्बरम् चिदंबरम् ॥आनंद॥

भूसुर त्रिसहस्त्र मुनीश्वरं विश्वेश्वरम्
नवनीतहृदयं सदयगुरुगुह तातमाद्यं, वेदवेद्यम्
वीतरागिण मप्रमेयाद्वैत प्रतिपाद्यम्
संगीत वाद्य विनोद ताण्डव जात बहुतर भेदचोद्यम् ।।आनंद।।

1) दोरसामैया (1782 ई. - 1816 ई.)

राग - पंतुवरालि - ताल - मिश्रचापु

(तेलुगु मूल)

पल्लवी : अद्भुत नटनम् बाड़ीनि मा अम्बरकेशुडु

अनुपल्लवी : अद्भुत मद्भुतमनि धर्मवर्धनि
अडुगडुगुकु जूचि मेच्च मोदमु हेच्च
हरहर शिवशिव यनुचु
सुरलंदरुनु वन्दनमु सेय

चरण : धात वेण्ट निल्चि चेत तालमु बूनि
ता-तै-तै यनगा पल्कुल नाति यनु
जीमूतम्बा संगीतमु वर्षिम्पगा
पुरुहूतुडपुड्ड वेणुगीतमु सेय
सभातलमुनकु कृपाततिनीशुडु
ता तकिट झणुत किटकिट तकतरि
किटतक झेमतरि किटतक झुमनि

अंगजु तण्ड्रि मृदंगमु पूनि
थलांगनि विनिपिंचगा आ
इंगितम्बु गनि मंगलदेवि करंगि
लयमु वेयगा कु

रंगनेत्रयौ धरांगन नादमु
भंगमु लेक चेलंगिम्प नपुड्ड
तत्तोंग तकतोंग तकणम तरितोंतम्
तरिकिट तकतोम् तरिकिटकतोमनि
करमुलेत्त मैमरचि ऋषुलेल्ल
हर हर हर यनगा नंदिके
श्वरु डंदरिकि मुंदरनु निल्चि
हेच्चरिक पराकनगा, लम्बो
दर सुब्रह्मण्यु लिरुगडलनु
शंकरभव मा मुद्धरयनि मोरलिड
धरितकिट झेणुतकिट द्दग्दुतक तद्धित्तलांगु
द्दग्दुतलांगु तक तधिम गिण तोम्मनि ।।अद्भुत।।

(भावानुवाद)

टेक : अम्बरकेश हर ने देखो
अद्भुत नृत्य किया ।

अनुटेक : कहकर 'अद्भुत' 'अद्भुत'
किया प्रशंसित धर्मवर्द्धनी ने
बढ़ा हर्ष, तब सुर बोले थे -
''हर हर शिव शिव वंदे ।''

चरण : 'ताल' लिये विधाता कर में
माँ वाग्देवी 'थै' बोली
मेघराज ने नाद बरसाया
अग्निदेव ने बजायी बाँसुरी
सभास्थल में ईश पधारे

था तकिट झणुत किटकिट तकतरि
किटतक झन्तरि किटतक झुम्मनि ।।अम्बरकेश।।

मन्मथ के पिता लेकर मृदंग
बजा रहे थे थलांग थलांग
सुनकर देवि मंगला
नृत्य किया था उसके अनुरुप
हिरन सम नथना घरंगना भी
सुस्वर में गा उठी थी
तत्तोंग तकतोंग तकणं तरितोंतम्
तरिकिट तकतों तरिकिटकतोम्
कर उठाकर सारे ऋषि मुनि
बोल उठे जय, हर हर हर हर
नंदिकेश्वर सबके सामने
आकर बोला - 'सावधान' हो
दोनों ओर खड़े पशुपति के
दोनों सुत, गणपति और सुब्रह्मण्य
'शंकर भव मामुद्धर' कहने लगे
घरितकिट झणुतकिट ह्ग्दुतक
तद्धि तलांगु ह्ग्दुतलांगु
तक तथिं गिण तोम् ।।अम्बर।।

2) गौलिपन्तु - आदिताल

(तेलुगु मूल)

धूर्जटि नटिंचेनु प्रदोष समयमुननु
ऊर्जितमुग रजताद्रिकोन नत्युन्नतमै वज्रमण्टपमुन

सुरजसुरुलु किन्नरु लिरुगड याडे नं
दीश्वर वरकर मुरजरवमुतो गूड
उरगमु लसियाड जडनुंडु उविद जडिसि वेड
मेरयुचु नरचंदुरु चिरुवेन्नेल गाय
प्रणवनादमु म्रोय ।।धूर्जटि।।

मुरहरुडति दुरमुन डमरवु पलिकिम्प
सरसिरुहभवु पेदवु लदरग कनिपिंप
वरुसक्रममुगानु बागुग नवरसकललतोनु
दरहसित मुखांबुरुहमुन मुद्दुगार चिरुचेमटलार
वरनूपुर मणुलु चरणमुल घल्लु घल्लुन
अरकालनमरु नसुरुनिकि गुण्डे झल्लन
मरुवैरि वगनु सुब्रह्मण्युनि बागुगनु
करमुनु कनिकरमुनु जूचि करुणिम्प - मेनु पुलकिम्प ।।धूर्जटि।।

(**भावानुवाद**)

तांडव नृत्य लगे करने धूर्जटि
प्रदोषवेला में
रजनादि शिखर पर
सर्वोन्नत वज्र मंडप में
सुर - असुर, किन्नर थे दो तरफ
नंदीश्वर रंभा रहे थे
सर्प झूल रहे थे और
जटाजूट में स्थित गंगा हुई भीत
करने लगी प्रार्थना और
चँद्रमा छिटक रहा थोड़ी - सी - चाँदिनी -
प्रणवनाद लगा गूँजने - ।।अम्बर।।

मुरहर ने जब चलाया
कमलासन ने तब कुछ कहते दिखाई दिया
क्रम में सुचारु रुप से 'नव - कला' सहित
स्मित वदन पर स्वेदकण चमक रहे जब
ललनाओं के चरण - नूपुर बज रहे जब
पैरों तले आधा दबे दनुज का तन काँप उठा तब
देख सुत सुब्रह्मण्य को शिव के
नेत्रों से उमड़ पड़ी करुणा, तन हुआ रोमांचित तब ।।अम्बर।।

3) राग तोडि - ताल रुपक

(तेलुगु मूल)

तत्तधिमि तधिदिद्धियनि सदाशिवु डाडीने

भावानुवाद

नृत्य किया तत्तधिम तधिदिद् कह हर ने

4) राग फरजु - आदि

(तेलुगु मूल)

आडीनम्मा हरुडु द्रुकट थैयनि
जाडग गिरिकन्यकनु क्रीगण्ट
जूड नंदि सेबासनि कोनियाड
चूड जूड वेडुकगा चंद्र
चूडुंडु मूडुकण्ड्लवाडु

* * *

संध्याघर्मदिनात्ययो हरिकराघात प्रभूतानन
ध्वानो नारिद गर्जितम् दिविषदाम् दृष्टच्छमु चंचला

भक्तानां परितोष बाष्पविततिर्विष्टिर्मयूरी शिवा
यस्मिन्नुज्वलतांडवम् विजयते तम् नीलकण्ठम् भजे

- शंकराचार्य

द्रुकट थै कहकर हर नाच उठे
देखा गिरि सुता को तिरछी नज़र से उन्होंने
देख उसे बोला नंदी बहुत अच्छा
देखा एकटक विनोद से चन्द्रचूड़
जो है त्रिनयन, लयकारी भगवान ।

viii) सहायक ग्रन्थ सूची

अंग्रेज़ी - Ancient Temples of Tamilnadu

- M. Parama Sivanadhan

तमिल

कोयिल पुराणम् - उमापति शिवाच्चारियार
नंदनार चरित्तर कीर्तनै - गोपालकृष्ण भारती

तेलुगु

चंद्रभागातरंगालु - स्वामी सुदर चैतन्यानंद
पेरियपुराणमु - मद्दालि सुब्बाराव
मन देवतलु - जानमद्दि हनुमच्छास्त्री
यात्रा मार्गदर्शिनी - रागं वेंकटेश्वर्लु
संपूर्ण भक्तविजयमु - जोन्नलगड्ड सत्यनारायण मूर्ति

* * *